

सारस्वत वाणी

प्रकाशनः
संयुक्त गौड सारस्वत सभा, कालिकत

ANNUAL SUBSCRIPTION ₹ 12/-

खंड 41 अंक 3 (केवळ अंगा खातीर) मार्च 1, 2019

SARASWATH VANI

Published By
SAMYUKTHA GOWD SARASWATH SABHA, CALICUT


KANCHI PURE
Pure Zari.
Pure Artistry.
Pure Brilliance.
Pure Kanchipuram at Jayalakshmi, with its opulent fusion of gold and silver zari, is the buzzmaker of the season. Come, get bedazzled.
Jayalakshmi®
THE BRIDAL DESTINATION
KOCHI KOZHIKODE THIRUVANANTHAPURAM THRISSUR
CALL: 4299999
PRODUCT CODE JL900
Shop at www.jayalakshmisilks.com

ॐ

श्री महालसा नारायणी प्रसन्ना:



Saraswath Vani

Published by
SAMYUKTHA GOWD SARASWATH SABHA
SOORAJ JEWELLERS,
KAMMATH LANE, CALICUT - 673 001, PH : 2701420
Reg. No. 16 / 1974

संपादक :
के. सुरेन्द्र राव
सूरज ज्वेलर्स, कामत लेन, कालिकत - 1.

उप संपादक :
डि. शांताराम नायक

वांगडीः
डॉ. बालगोपाल टि.एस.प्रभु
जि.संतोष पै
डॉ. आशा जयकुमार

अधिकाराक लागून वांगडी :
ऐम. कृष्णानंद कम्मत (अद्यक्ष)
जि. प्रभाकर कम्मत (कार्यदर्शी)

खंड 41 | अंक 3 | (केवळ अंगा खातीर) | मार्च 1, 2019

मांडावळ

		पान
Cover Story		7
"भक्तोत्तमालि निस्संगता"	कृष्ण नारायण नायक, कोचि	9
कुडजाद्री वयरचि सौदर्यलहरि	उषा आर भट्, कोच्चि	12
കൊട്ടാരത്തിൽ താമസിച്ച യോഗി	വി.കൃഷ്ണവാദ്ധ്യർ	15
യൂറോപ്പിന്റെ നെറുകയിൽ !	ഡോ.ആശാജയകുമാർ	17
സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർ നേരിടുന്ന പ്രശ്നങ്ങളും പരിഹാരമാർഗ്ഗങ്ങളും	ബി.വസന്ത ഷേണായി	26
KNOWLEDGE OF VEDAS VS MODERN SCIENCE	BabuRaghutham	36
विद्यार्थि पंक्ति		41
खबर आनी घडणूक		45
खास दीस		48

ATTENTION PLEASE

Materials, News items for publication in the Saraswath Vani should be sent to the following address before 25th of each month:

K. SURENDRA RAO
Editor, Saraswath Vani
Sooraj Jewellers
Kamath Lane
CALICUT - 673 001
e-mail: saraswathvani@gmail.com

प्रार्थना

यथापि रुचिरं पुष्पं वर्णवच्चाप्यगन्धकम्।
एवं सुभाषिता वाणि निष्फला *f* कुर्वतो भवेत्।।

धम्मपदम्

They speak of an eternal Asvattha, the ever-changing tree of phenomenal existence, rooted above and branching below. He who knows it is a man of knowledge.

सुभाषितम्

ऊर्ध्वमूलमधः शाकामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्यं वेद स वेदवित्।।

(श्रीमद् भगवद्गीता)

He, who consumes the ripe fruit plucked at the right time, not only enjoys the fruit-juice, but also gets the mature seeds for further planting.

अमृतवचनम्

He is the Mahatma who keeps the tongue, the reproductive organ, word and mind under perfect control and patiently withstands all provocations

- Swami Chinmayananda

“भक्तोत्तमालि निस्संगता”

कृष्ण नारायण नायक, कोच्चि

काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्यादि वैरिपक्ष दोषांचे चडवूणे मेळावणेन भोगूका जांवचे खेदकर आनि भयानक भविष्यां पासून पुराणेतिहास पृष्ठान्तु मस्त प्रतिपादन आसयि। हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिप, कुंभकर्ण, रावण, शिशुपाल.... येसग्ग विरुद्ध विकट रसोन्मत कथापात्रां सर्माळेन्तु प्रकट जत्तायि। जल्यारि संगमुक्त तपोनिष्ट सिद्धमानवयि ह्या मायावलयाक अतीत राबनाति। भृगु, विश्वामित्र्‌, परशुराम....ह्यादिशे फन्तीन्तूयि उतूलकिं नांवं उद्देत्तायि। कुल गोत्रान प्रतापवैभवान खल्लट खंय न्हंय आसूनूयि दुर्वासमुनि विवाद विमर्शांचे वेष्टणेन्तु पडता। प्रीतीन उपहार दिल्लिलि मधुपुष्पमाला सवारि गजनिमित्त कारणान्तरान रजप्रतलान्तु नामावशेष जाली म्हळेले हेतु संभवान शापग्रस्त देवसंघान कळ्ळेले कठिन मुक्ति प्रयत्ना परामर्श हृदय स्पर्शि आस। नृपोत्तम भक्तोत्तम अम्बरीषारि अकारण केल्लेले कोपवृष्टिचे प्रत्याघात धर्मरक्षणे दृष्ठीन उत्तुलें उज्वल दृष्ठान्त!

अम्बरीक्ष सादा सामान्य रायु न्हंय अस्सिलो। कस्सीय गुडळावचें सरबर कोर्चे सडळ स्वभावाचो न्हंय। उत्तम संस्कृति राजधर्म इत्यादिक आधार जावनु पालन आचरण कोर्चो जनप्रिय हरिप्रिय रायु तं अस्सिलो। व्रत विशेष सग्ग विधियुक्त विधानयुक्त आचरण कोर्चे स्थिरोत्साहि भरणाधिकारि अस्सिलो।

नियति नियोग जायत प्रकृति विनोद जायत त्या परीक्षेन्तु हून उदका गोटान्तु पळ्ळो रायु। परीक्षकु दुर्वासु म्हळ्यारि वगळें सबार कांयि सांगूका नाका नवें? क्रमान एकादशि व्रत पालन कोर्नु हर्दूसा गणनानुसार समयारि पारणेक तैयार काडतालो रायु, त्या फन्ता! त्या सूक्ष समयारि तं दुर्वासालें आगमन। कांयि चुकूनात्तिले शास्त्रोक्त स्वागत सत्कार केल्लो मुनीक। स्नानादिक जावनु पारणेक पांवता म्हुण देविल्लो दुर्व्वासु समयारि पर्तोलोना। अपायान्तु उपाय म्हळेले

प्रार्थना

यथापि रुचिरं पुष्पं वर्णवच्चाप्यगन्धकम्।
एवं सुभाषिता वाणि निष्फला *f* कुर्वतो भवेत्।।

धम्मपदम्

They speak of an eternal Asvattha, the ever-changing tree of phenomenal existence, rooted above and branching below. He who knows it is a man of knowledge.

सुभाषितम्

ऊर्ध्वमूलमधः शाकामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्यं वेद स वेदवित्।।

(श्रीमद् भगवद्गीता)

He, who consumes the ripe fruit plucked at the right time, not only enjoys the fruit-juice, but also gets the mature seeds for further planting.

अमृतवचनम्

He is the Mahatma who keeps the tongue, the reproductive organ, word and mind under perfect control and patiently withstands all provocations

- Swami Chinmayananda

“भक्तोत्तमालि निस्संगता”

कृष्ण नारायण नायक, कोच्चि

काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्यादि वैरिपक्ष दोषांचे चडवूणे मेळावणेन भोगूका जांवचे खेदकर आनि भयानक भविष्यां पासून पुराणेतिहास पृष्ठान्तु मस्त प्रतिपादन आसयि। हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिप, कुंभकर्ण, रावण, शिशुपाल.... येसग्ग विरुद्ध विकट रसोन्मत कथापात्रां सर्माळेन्तु प्रकट जत्तायि। जल्यारि संगमुक्त तपोनिष्ट सिद्धमानवयि ह्या मायावलयाक अतीत राबनाति। भृगु, विश्वामित्रु, परशुराम....ह्यादिशे फन्तीन्तूयि उतूलकिं नांवं उद्देत्तायि। कुल गोत्रान प्रतापवैभवान खल्लट खंय न्हंय आसूनूयि दुर्वासमुनि विवाद विमर्शांचे वेष्टणेन्तु पडता। प्रीतीन उपहार दिल्लिलि मधुपुष्पमाला सवारि गजनिमित्त कारणान्तरान रजप्रतलान्तु नामावशेष जाली म्हळेले हेतु संभवान शापग्रस्त देवसंघान कळ्ळेले कठिन मुक्ति प्रयत्ना परामर्श हृदय स्पर्शि आस। नृपोत्तम भक्तोत्तम अम्बरीषारि अकारण केल्लेले कोपवृष्टिचे प्रत्याघात धर्मरक्षणे दृष्ठीन उत्तुलें उज्वल दृष्ठान्त!

अम्बरीक्ष सादा सामान्य रायु न्हंय अस्सिलो। कस्सीय गुडळावचें सरबर कोर्चे सडळ स्वभावाचो न्हंय। उत्तम संस्कृति राजधर्म इत्यादिक आधार जावनु पालन आचरण कोर्चो जनप्रिय हरिप्रिय रायु तं अस्सिलो। व्रत विशेष सग्ग विधियुक्त विधानयुक्त आचरण कोर्चे स्थिरोत्साहि भरणाधिकारि अस्सिलो।

नियति नियोग जायत प्रकृति विनोद जायत त्या परीक्षेन्तु हून उदका गोटान्तु पळ्ळो रायु। परीक्षकु दुर्वासु म्हळ्यारि वगळें सबार कांयि सांगूका नाका नवें? क्रमान एकादशि व्रत पालन कोर्नु हर्दूसा गणनानुसार समयारि पारणेक तैयार काडतालो रायु, त्या फन्ता! त्या सूक्ष समयारि तं दुर्वासालें आगमन। कांयि चुकूनात्तिले शास्त्रोक्त स्वागत सत्कार केल्लो मुनीक। स्नानादिक जावनु पारणेक पांवता म्हुण देविल्लो दुर्व्वासु समयारि पर्तोलोना। अपायान्तु उपाय म्हळेले

प्रमाणाधारारि रावळर ऋत्विकांलें निर्देशारि केवल तीर्थपान कोर्नु व्रत नियमलंघन जावनु नात्तिलें राकीलें रायान। इन्चेयि उपरान्ते पाविले दुर्वासु कांयरी कोळनु खभदळेला दुर्वासालो क्षोभु म्हळ्यारि दर्ल्यारि अटापतलो वे? आकाश पाताळ कडकडेलें। तपशक्ति प्रभावान जठांश खुन्टून दुर्वासान केल्लेले शौर्यप्रहारान उद्भव जगेली दुर्गम शक्तिरूपि, अम्बरीष ताडनेक आक्रान्तान मुकारि सर्ली। निर्दोषि रायु निर्जूड जालो। किं कर्तव्य विमूढ स्तब्द राबिलो रायु। ध्यानस्त अवस्थेन्तु बुडलो।

सर्वोर्पणान हरिचरणशरण धर्लें। त्या ध्यानरूप तेजोमण्डळान्तु एकि झळकि - एकि सूक्ष्म ज्योति निर्गळेत्ता दृष्ठि पळ्ळी। वायुवेगान तेजोराशि सुदर्शन चक्र पावनु रौध्र संहार सत्वाचो सर्वनाश कोर्नु दुर्वासाक फाटि घेत्तलें। अकारण केल्लेले शक्ति प्रयोगाचें परिणाम! दुर्वासान धांवु आरांभीले सृष्टि संहार मूर्ति सान्निध्यान्तु अभयना। त्या दुर्घड सन्धिमुक्ति तान्चें परिधि वायर खंय! स्थिति संचालक समक्षान्तु पाविले दुर्वासाक थांगायि उसरमेटि! विचित्र दृश्य अनुभव! किस्कूट चूकिनात्तिले निष्कळंक एक परमपवित्र पुण्यात्मक, उत्तम हरिभक्ताक समस्त जनप्रिय सेवकाक घोरशिक्षेक पात्र केल्लेले खात्तिरि श्रीधाम आज्ञेक सरि राकूनात्तिले धर्म रक्षा दौत्याक अग्रसर जालेंले तं सुदर्शन चक्र! सव्धि मुक्ति अम्बरीषा लागी थाकून मात्र म्हुण स्थिति नाथान हाथु सोळ्ळो किं दुर्वासाक परत अम्बरीषालेचि दर्लान्तु वैक्लब्यान पर्तूका जालें। हा! त्या नीतिकुन्जान्तु प्रतिकार प्रतिषेध खंय? किन्चित ना। स्तुति वन्दनेन सुदर्शन प्रथम शान्त कोर्नु कृतार्थनेन पर्तीलें। मात्र न्हंय भव्य भावान सर्वादरान दुर्वासाक मानु संपूजन कोर्नु आर्षसंस्कार औन्नत्य उच्चस्थ केलें। अम्बरीष चरित्र अनश्वरजालें त्या महत्पणान।

तत्व प्रवचनाचें हरिकथा कथनेचे मध्ये अथवा खयं एकाग्र विषय पारायणाचेऽ ान्दर्भारिम् ाुग्धकणठयोभ् ाागुप् ाांवताद ान्टवताऽ ाणाऽ ाम्बन्धितऽ ागट्टयि आजितांयि आश्चर्य पांवतायि, आश्वास जोडतायि आनन्दु भर्तायि। धर्मु राकितल्याक धर्मु केदाण हाथु सोणा !!!

कुडजाद्री वयरचि सौदर्यलहरि

- एक लघु यात्रा विवरण

उषा आर भट्, कोच्चि

जयते काल मनान्तु ओप्पुरबायेन मोगु करनु लाळन दीवनु वड्डोव्नु घेव्नु अयलेलि कामना तं अस्सिल्ली, नवरात्ती पर्वाचे वेळारि अक्षरांबिका जाव्नस्सिल्ले जगदम्बिका कोल्लूर मूकांबिके सन्निधानान्तु वोच्चूनु, तिगेले चरण कमलांकडे वासु करनु, नवरात्री उत्सवान्तु भागु घेंव्का म्हणु। पुण, इच्छा केल्यारि मात्र जायना, यात्रे खत्तीरि, धन काणु दव्वरल्यारि मात्र जायना, ईश्वरेच्छा लगेन समागत जल्यारि मात्र तीर्थयात्रा साध्य जत्ता म्हणु प्रमाण दिंचे तस्सि, या वर्षा, एक्कूणसाठि वर्सा प्रायेरतं, तजो सुमुहूर्तु पाव्नु, ते चिरकाल स्वप्न साक्षात्कार जल्यां। कारण, तीर्थयात्रा एकि उल्लास- विनोद यात्रा नंयि; एक तीर्थाटन तं। सर्व तीर्थार - तांचेयि लक्ष्य समर्पण तं, एक आत्म समर्पण; व्यक्ति बोध सोडूनु समष्टि बोधा प्रति अस्सिल्लें एक प्रयाण।

पश्चिमाद्रीचें सौंदर्य

मंगळूर महानगराचें समतल जाव्नु, उडुपा, कुन्दापुर आदि शहरं दण्टवूनु तज्जे उपरान्ते हेम्माडी सुकूनु वनमार्गान्तुल्यान यात्रा करतना, देहाक पोरसूचे सुख-शीतळ वरेंयि, हीण्डु भोरनु खिंचूनु असचे वासे, आपस एक्काक-एक झरवूनु जंचो मरमर शब्दूयि कवासे फुल्लांचे मनांक मत्त भोरचो परिमळूयि, केरलान्तुले खंचेकी एकसुन्दर- ग्रामीण- निर्मल-तरुण-नादान-मनोमोहक गावान्तुल्यान तं अम्मि यात्रा करनु अस्सयि म्होणु मन्नाक भ्रमु लग्गेयतलें । पर्किष्ट देशान्तुल्यान तं अंगेलि यात्रा जत्ता म्हणु अम्मि थोडे घडियांक, विस्सतलीं। तुतले पुरसि सादृश्य तं केरलचे भूप्रकृतीकयि, तो मार्गाचे दोन्नीयि बारींकयि दक्कूक पडचे दृश्यांकयि। पश्चिमघाट्ट पर्वतांक खण्डन कोर्नु, तज्जे मध्येन्तुल्यान वाट कोर्नु होळचो नदियोयि, कसलें उणत्व संगूक जायना तस्सि पच्चूवेंपण नेस्सूनु रब्बिल्यो रूक-रुक्कावळीयि, इन्द्रधन्ता हर्वोव्चे लेक्कान, तज्जापसीयि चड वर्ण-रंगाचे फुल्लंयिं तळियान्तु -तट्टान्तु धोर्नु, हिमवर्षाचे थेंवे सूचिपतक (hair pin) जाब्नु केस्सांक मार्नु रब्बिल्यो फुलझाडयिं, थांयिं एंचे यात्रि जनांक स्वागत करनु, मार्गाचे दोन्नीयि बरीक फन्तीन रब्ल्यांयिं। वारें-पाव्सु,

ठंण्डायि - शयाको, हुजवाडु - काळूक यें सर्वयि केद्दाण सोयरिं जाव्नु पव्तलीं म्हणु, एक विदग्ध ज्योतिषाक सरि भविश्य वाणी प्रवचन करुक जत्तलवें म्हणु संशयु दिस्चे तस्सि त थंगाची चपल कालावस्था। सूर्य किरणान्तु उज्वल प्रभावन शोभायमान जाव्नु, रजत मुकुट धारण करनु दूद वे होळता म्हणु दिसचे लेक्कान खाल होळ्चे फेणु भरलेलि नदियोयि (Waterfalls) घेव्नु, निर्लोभ जाव्नु खंद्याक - खान्दु मार्नु रब्बिल्ले वृक्ष समूहाकायि घेव्नु, अपण्याले मस्तक निटं धोर्नु रब्ला सह्याद्री। कितलें पुरसिप् ाळेल्यारीयि,ा कितलेप् ुरसिम् ानान्तुके ल्यरियि,ा कितलेप् ुरसिज ांच- ग ाविषण केल्यारियि ये पश्चिम घट्ट पर्वत श्रेणीक पूर्णजाव्नु समापिष्ट (understand) करनु वर्णन करुक, एक अतिकुशल बरोप्या सरि साध्य जाव्ना। तगेले निस्सीम सौन्दर्याक तत्तुल्य जाव्नु, तत्स्थानारि विंगड एकु जागो दोव्रूक ना म्हळेलें, एक नग्न सत्य तं।

भारत उपभूखण्डाचे पश्चिम भागाक, गुजरात राज्यान्तुले ताप्ती नदी सुकूनु प्रारंभु जंचो पश्र्चिम घट्ट पर्वतु पळ्यायि। पश्र्चिम घट्टाचि लगभग दिग्गायि 1600 कि मीट्टरयि, सामान्य (average) ऊंचायि 1200 मीट्टरयि तं । हन्तु 2695 मीट्टर ऊंचायि अस्चे इडुक्की जिल्लेंतुंले आनमुडी तं केरल राज्यान्तु अस्सिल्यां ऊंच पर्वतशिखर। दुस्सरचे स्थान नेय्याट्टिनकरा तालूकांत असचे 1869 मीट्टर ऊचायि अगस्त्यकूटाक

अरबि समुद्राक वोड्याण लेक्कान गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाड आदि राज्यान्तु जाव्नु फन्दलेव्नु तं पळ्ळायि। पश्र्चिम घट्ट पर्वत समूहिक विश्व पैत्रृक सूचीन्तु स्थान मेळ्ळेलें अस्स।

कोल्लूर स्थानाचे निर्वचन

कोल्लूर गांवु, मंगळूर सुकूनु 140 कि. मीट्टर दूर उत्तर-पूर्व दिशेरि तं अस्स। रेल गाडी वाट जल्यारि बैंन्दूर स्टेषण तं अस्सिल्यान्तु लग्गि पळ्ळेलें स्थल। कोल्लूर थकूनु 30 कि. मीट्टर दूर अस्सिल्ले बैंन्दूर स्टेषनाक कोल्लूर रोड म्हणूयि नाम आसा। गोकर्ण थकूनु कन्याकुमारि पर्यन्त, फूडे कालाक केरळ राज्याचो भागु खंयि अस्सिल्लो। त्या कारणान जाव्यात कोल्लूर देवी दर्शनाक एंचि चडाव भक्त जनयि मलबारि उल्लोंचि तं। क्षेत्ताकृति केरळीय तं : तसीचि थंगा अनुवर्तन करनु एंचा

आचारयि केरळीय रीतीचे तं। केरळान्तुले तरहाचे केरयोयि (वीथी), अग्रहार लक्षणयि, ये विश्वासाक बल दीव्नु, पौराणिक स्मृतींचे दृश्य-चिन्ह जाव्नु बाकि रब्ल्यां, कोल्लूरान्तु।

कुन्दापुर थकूनु कोल्लूराक वच्चे वट्टेरि अम्बावन सीमा आरंबता। प्रधान क्षेत्र कवाड जाव्नास्सिल्ले हंगा थकूनु तं देवीलो वन प्रदेशु शुरु जला। हंगा "मासिकट्टा माकाळी" "पग्घबाली","वनदुर्ग" आदि वनदेवतेंक आराधना करचि देवळी अस्सा। तंका पांयि पोणु कोल्लूरचे खत्तीरि मुक्कारि वच्चात। अम्बा वनाचे चारीयि भागाकयि शक्ति आराधनेचे पूर्व रूप दिक्कूक मेळ्तलें। "केव्वडी" राजवंशूयि, राणी चेन्नम्मा जावनूयि सुदृढ बन्धुत्व अस्सिल्ले कोल्लूर, आजि दिक्कूचे देवळाक 1200 वर्षां भायर चरित्र अस्स"। "कैलास कुटुम्ब" म्हळेले संकल्पान तं देवळ प्रतिष्टित जल्यां। किस्ताब्द 1140 न्तु, हल्कीचे बिन्की राजकुलान्तुले पेन्गण्णा सामन्तु म्हळेले राजकुमारान ये देवळाचें पुनरुद्धारण केल्यां म्हणु हंगा शिला लिखित अस्स।

കൊട്ടാരത്തിൽ താമസിച്ച യോഗി

വി.കൃഷ്ണവാദ്ധ്യാർ

ഒരിക്കൽ ഒരു രാജാവിന് വിചിത്രമായ ഒരു ആലോചന വന്നു. ഒരു യോഗിയെ തന്റെ കൂടെ താമസിപ്പിച്ചാലോ? തനിക്ക് നല്ല നല്ല ഉപദേശങ്ങൾ തരും. നേർവഴി ഉപദേശിക്കും. ഭരണത്തിനും അതുപകരിക്കും. തക്കത്തിന് രാജാവിന് ഒരു മഹാതപസ്വിയെ കണ്ടുമുട്ടാൻ സാധിച്ചു. രാജാവ് തന്റെ ആഗ്രഹം യോഗിയുടെ മുന്നിൽ അവതരിപ്പിച്ചു.

യോഗി അപ്പോൾ തന്നെ സമ്മതിച്ചു. ശരി. അങ്ങനെ ആയിക്കോട്ടെ. ഞാൻ വരാം.

യോഗിയുടെ പെട്ടെന്നുള്ള ഈ സ്വീകരിക്കൽ രാജാവിൽ ലേശം സംശയം വളർത്തി.

ഇതെന്താ ഇത്! ഇദ്ദേഹം ശരിക്കും യോഗിതന്നെയോ: യോഗിയെന്നാൽ സർവ്വസംഗ പരിത്യാഗി എന്നല്ലേ. ഇത് നോക്ക്. കൊട്ടാരത്തിൽ വന്ന് താമസിച്ചു കൂടെ എന്നു പറയേണ്ട താമസം കെട്ടും ഭാണ്ഡവുമായി ഇറങ്ങിയിരിക്കുന്നു. മഹാത്മാവ് ആണെങ്കിൽ കൊട്ടാരത്തിലെ ഭോഗങ്ങളാൽ ഭ്രമിച്ച് വരുമായിരുന്നോ? ഏതായാലും വിളിച്ചില്ലേ. നോക്കാം. രാജാവ് യോഗിയെ തന്റെ കൂടെ കൊട്ടാരത്തിൽ താമസിപ്പിച്ചു. യോഗി കൊട്ടാരത്തിലെ സകല സുഖസൗകര്യങ്ങളും ആസ്വദിച്ച് ജീവിച്ചു തുടങ്ങി. രാജാവിന് സംശയം വർദ്ധിച്ചു. കുറച്ചു ദിവസങ്ങൾ കൂടി കഴിഞ്ഞു. രാജാവിന് സംശയം മൂത്ത് മൂത്ത് വന്നു. ഇനി ചോദിക്കാതിരിക്കാൻ വയ്യ എന്ന അവസ്ഥ.

ഇതെന്തൊരു യോഗി. സുഖമായി ഭോജനം ചെയ്യുന്നു. ഫലങ്ങൾ യഥേഷ്ടം കഴിക്കുന്നു. പട്ടുമെത്തയിൽ സുഖമായി ശയിക്കുന്നു.സുഗന്ധലേപനങ്ങൾ ലോഭമില്ലാതെ പൂശുന്നു. സുഖലോലുപതയിൽ മുങ്ങിത്താഴുന്നു. ഇദ്ദേഹം യോഗിയല്ല. തീർച്ച. രാജാവ് സഹികെട്ട് ഒരു ദിവസം യോഗിയോട് ചോദിക്കുകതന്നെ ചെയ്തു. അങ്ങയെ ഒരു മഹാത്മാവായിട്ടാണ് ഞാൻ കരുതിയത്. അത് തെറ്റായി എന്ന് ഇപ്പോൾ എനിക്ക് തോന്നിത്തുടങ്ങിയിരിക്കുന്നു. മഹാത്മാവാണെങ്കിൽ അങ്ങ് ഈ സുഖഭോഗങ്ങളിൽ ആകൃഷ്ടനായി ഇവിടെ വന്ന് കൂടില്ലായിരുന്നു. പക്ഷേ അങ്ങ് വന്ന് സുഖമായി ആസ്വദിച്ച് ജീവിക്കുന്നു. അതും ഒരു കൊട്ടാരത്തിൽ. ഞാനും അങ്ങനെ തന്നെ ജീവിക്കുന്നു. അപ്പോൾ ഞാനും അങ്ങും തമ്മിൽ എന്താണ് വ്യത്യാസം.

യോഗി എല്ലാംകേട്ടു ചിരിച്ചങ്ങനെ നിന്നു. കുറച്ചുനേരം. പിന്നെ ചോദിച്ചു. "അങ്ങയുടെ ചോദ്യം ശരി തന്നെയാണ്. അതിനുള്ള ഉത്തരത്തിന് നമുക്കൊരിടം വരെ പോകേണ്ടി വരും. അങ്ങേയ്ക്ക് സമ്മതമാണോ" ജിജ്ഞാസുവായ രാജാവ് സമ്മതിച്ചു. "എന്നാൽ എന്റെ കൂടെ വന്നാലും." യോഗി കൊട്ടാരത്തിന് വെളിയിലേക്കിറങ്ങി പിന്നാലെ രാജാവും. കുറച്ചുദൂരം അവർ നടന്നു.യോഗി അതുവരെ ഒരക്ഷരം ഉച്ചരിച്ചില്ല. യോഗിനിന്നു. എന്നിട്ട്

പറഞ്ഞു. “മഹാരാജാവെ. ഞാൻ ഒരിക്കലും മുന്നോട്ട് വെച്ചകാൽ പിന്നോട്ട് വയ്ക്കാറില്ല. അത് കൊണ്ട് ഞാനിനി കൊട്ടാരത്തിലേയ്ക്കില്ല. അങ്ങേയ്ക്ക് വേണമെങ്കിൽ എന്നോടൊപ്പംവരാം. “രാജാവ് ശരിക്കും ഞെട്ടി. “ങ്ങേ അങ്ങ യോടൊപ്പം വരാനോ. അങ്ങ് എന്തസംബന്ധമാണീ പറയുന്നത്. ഞാൻ അങ്ങ യുടെ കൂടെ വന്നാൽ എന്റെ ഉത്തരവാദിത്തങ്ങളൊക്കെ ആരു നിറവേറ്റും. ഞാനൊരു രാജാവാണെന്നറിയാമല്ലോ. രാജ്യം ഭരിക്കേണ്ട രാജാവ്. എനി ക്കെന്റെ പ്രജകളോട് കടപ്പാലില്ലേ. അതൊക്കെ ഉപക്ഷിച്ച് അങ്ങയോടൊപ്പം എനിക്കെങ്ങനെ വരാനാവും.” അന്നേരം രാജാവിനോട് യോഗി പറഞ്ഞു. “അതെ എനിക്കതൊക്കെ അറിയാം. അങ്ങേയ്ക്ക് വാരൻ പറ്റില്ല. അതുതന്നെ യാണ് ഞാനും അങ്ങയുമായുള്ള വ്യത്യാസം. കൊട്ടാരത്തിൽ കഴിയുന്നതിലും വെറും കുടിലിൽ കഴിയുന്നതിലും പക്ഷേ, എനിക്കൊരു വ്യത്യാസവുമില്ല. ഞാനെന്നും എപ്പോഴും സ്വതന്ത്രനാണ്. യാതൊന്നിനും എന്നെ ബന്ധിക്കാനാ വില്ല.”

അതും പറഞ്ഞ് യോഗി തന്റെ വഴിക്ക് പോയി. രാജാവിന് തനിക്ക് പറ്റിയ അബദ്ധം മനസ്സിലായി. ഒന്നു കൂടി ജ്ഞാനിയായി അദ്ദേഹം കൊട്ടാരത്തി ലേക്ക് മടങ്ങി.

യൂറോപ്പിന്റെ നെറുകയിൽ !

(യൂറോപ്പ് പര്യടനം)

ഡോ.ആശാജയകുമാർ

ജനീവ തടാകം

പശ്ചിമ യൂറോപ്പിലെ ഏറ്റവും വലിയ തടാകമാണിത്. 97 കി.മീ നീളമുണ്ട്. ഈ തടാകത്തിന്. ഇവിടെ മത്സ്യബന്ധനം നിരോധിച്ചിരിക്കുകയാണ്. ഇന്ദ്രനീലത്തിന്റെ കളറിലുള്ള ആകാശവും, തടാകവും തടാകത്തിൽ നീന്തിത്തുടിക്കുന്ന വെള്ള അരയന്നങ്ങൾ. ചെറുതും വലുതുമായ അസംഖ്യം ബോട്ടുകളും ചെറുകപ്പലുകളും ടൂറിസ്റ്റുകളേയും കൊണ്ട് സവാരി നടത്തുന്നു. തടാകക്കരയിൽ മനോഹരമായ പാർക്ക്. ഞങ്ങൾ പാർക്കിൽ സായാഹ്ന സവാരി നടത്തി. റോഡിനപ്പുറം എവിടെ നോക്കിയാലും സ്വിസ്സ് വാച്ച് കടകൾ. ഓരോ കെട്ടിടത്തിനുമുകളിലും വാച്ചിന്റേയോ ക്ലോക്കിന്റേയോ മോഡൽ അല്ലെങ്കിൽ ഹോർഡിംഗ്.

വിചിത്രമായ വേഷം ധരിച്ച ഒരു യാചകനെ കണ്ടു. സ്വർണ്ണവർണ്ണത്തിലുള്ള, നല്ല ഉയരമുള്ള പ്രതിമയാണെന്നേ ഒറ്റ നോട്ടത്തിൽ തോന്നൂ. വസ്ത്രങ്ങളിലും മുഖത്തും, തൊപ്പിയിലുമൊക്കെ സ്വർണ്ണവർണ്ണത്തിലുള്ള പെയിന്റടിച്ച് രണ്ടടിയോളം ഉയരമുള്ള സ്റ്റൂളിൽ കയറി അനങ്ങാതെ നിൽക്കുകയാണയാൾ. കുപ്പായത്തിന് സ്റ്റൂളിനെ മൂടാനുള്ളത്ര ഇറക്കമുണ്ട്. അതുകൊണ്ട് അയാൾക്ക് 7-7 ½ അടി ഉയരം തോന്നിച്ചു. ഇടയ്ക്ക് മൊബൈൽ ഫോണിൽ സംസാരിക്കുന്നതുകണ്ടപ്പോഴാണ് ഇതു ജീവനുള്ള മനുഷ്യനാണെന്ന് മനസ്സിലായത്. തടാകത്തിൽ നിന്നു വീശുന്ന തണുത്ത കാറ്റേറ്റ്, ചൂടില്ലെങ്കിലും കണ്ണിൽ തറയ്ക്കുന്ന സൂര്യ രശ്മികളേറ്റ് ആ സ്റ്റൂളിനു മുകളിൽ അനങ്ങാതെ നിൽക്കുന്ന ആയാളെ സമ്മതിക്കണം.

അച്ഛന്റെ കൂടെ പാർക്കിൽ വന്ന രണ്ടു ചെറിയ പെൺകുട്ടികൾ (5,7 വയസ്സുകാണും) തലകുത്തിമറയുന്നത് കാണേണ്ട കാഴ്ചയായിരുന്നു. ഒളിംപിക്സിൽ അവർ മെഡൽ നേടിയേക്കുമെന്ന് ഞങ്ങൾക്കു തോന്നി. പട്ടിയേയും കൂട്ടി നടക്കാനിറങ്ങിയ മദാമ്മ, പട്ടി അപ്പിയിട്ടപ്പോൾ കയ്യിൽ ഗ്ലൗസ് ധരിച്ച് അത് ഒരു മടിയും കൂടാതെ വാരിയെടുത്ത് അടുത്തു കണ്ട ബിന്നിലിട്ട്, ഒന്നും സംഭവിക്കാത്ത മട്ടിൽ നടന്നു പോയി.

പല തരത്തിലും ഉയരങ്ങളിലുമുള്ള മരങ്ങൾ മഞ്ഞ, തത്തപ്പച്ച, കടുംപച്ച, ചുവപ്പ്, ഓറഞ്ച് , ബ്രൗൺ നിറങ്ങളിലുള്ള ഇലകളുമായി നിൽക്കുന്ന കാഴ്ച പൂക്കാവടികളെ ഓർമ്മിപ്പിച്ചു, പല വർണ്ണങ്ങളിലുള്ള ട്യൂലിപ്പ് പൂക്കളും ഉദ്യാനത്തിന്റെ മനോഹാരിതയ്ക്ക് മാറ്റു കൂട്ടി.

ഈ ഉദ്യാനത്തിൽ ലോകത്തിൽ ഏറ്റവും ഉയരത്തിലേക്ക് വെള്ളം ചീറ്റുന്ന ഫൗണ്ടൻ ഉണ്ടെന്നു വായിച്ചിരുന്നു. Jet d' Eau എന്നാണത് അറിയപ്പെടുന്നത്. ദൗർഭാഗ്യവശാൽ അറ്റകുറ്റപ്പണികൾക്കായി ആ ജലധാരയുടെ

പ്രവർത്തനം നിർത്തിവച്ചിരിക്കുകയായിരുന്നു. ഞങ്ങൾ അതിനടുത്തുപോയി, ജലധാരയ്ക്കു ചുറ്റും നിർമ്മിച്ചു വച്ച ശില്പങ്ങൾ കണ്ടിട്ട്, നടത്തം തുടർന്നു.

ഗൈഡ് പറഞ്ഞ സമയത്ത് എല്ലാവരും ബസ്സിൽ കയറി. ഞങ്ങൾ ജനീവയുടെ മറ്റൊരു ഭാഗത്തെത്തി. അവിടെയാണ് ഐക്യരാഷ്ട്രസഭയുടെ ആസ്ഥാനം.

UNOG - UNITED NATIONS OFFICE AT GENEVA

ലോകത്തിലെ നാല് UN ഓഫീസുകളിൽ, വലിപ്പത്തിന്റെ കാര്യത്തിൽ രണ്ടാം സ്ഥാനമാണ് ജനീവയിലെ ഓഫീസിന്. ഒന്നാം സ്ഥാനം ന്യൂയോർക്കിലെ ഓഫീസിനാണ്. (UN ഓഫീസുകൾ വിയന്നയിലും നൈറോബിയിലുമുണ്ട്.) Palais des Nations എന്ന കെട്ടിട സമുച്ചയത്തിലാണ് ഈ ഓഫീസ് പ്രവർത്തിച്ചുവരുന്നത്.

1929-38 കാലയളവിൽ പ്രവർത്തനമാരംഭിക്കുകയും, 1960 കളിൽ പ്രവർത്തനം വിപുലീകരിക്കുകയും ചെയ്തു.

ഇതിൽ അംഗങ്ങളായിട്ടുള്ള 193 രാജ്യങ്ങളുടെ പതാകകൾ നാലു നിരകളിലായി നാട്ടിയിട്ടുണ്ട്. വലിയ കാറ്റില്ലാത്തതിനാൽ പതാകകളെല്ലാം ചുരുണ്ടു കിടക്കുകയായിരുന്നു. ഞങ്ങൾ പാടുപെട്ടാണ് ഇന്ത്യയുടെ പതാക കണ്ടെത്തിയത്. കുറച്ചുനേരം സൂക്ഷിച്ചു നോക്കിക്കൊണ്ടിരിക്കെ, ഒരു കാറ്റുവന്ന് ഇന്ത്യൻ പതാക നിവർത്തുകയും, അശോകചക്രം തെളിഞ്ഞുകാണുകയും ചെയ്തു! ഞങ്ങളെല്ലാവരും കൂടി കയ്യടിച്ചു. എല്ലാവരും ഓഫീസിന്റെ അടഞ്ഞുകിടക്കുന്ന പ്രധാനേ ഗറ്റിനടുത്തുന ിന്ന്േ ഫാട്ടോയെടുത്തു.(ഞായറാഴ്ചയായിരുന്നു അന്ന്.) ഞാൻ കേണൽ മോഹൻദാസിന്റെ കൂടെ ഒരു ഫോട്ടോയെടുത്തു.

റോഡിന്റെ എതിർവശത്തായി ഒരു കാലൊടിഞ്ഞ വലിയൊരു കസേര കണ്ടു. "Broken chair" എന്നാണിതിന്റെ പേര്. 5.5 ടൺ മരം കൊണ്ടു നിർമ്മിച്ച ഈ കസേര ഡാനിയേൽ ബെർസെറ്റ് എന്ന സ്വിസ്സ് ശില്പിയുടെ ഭാവനയിൽ കുരുത്തതാണ്. ലൂയി ജെനീവെയാണ് കാർപെന്റർ..

ഫെബ്രുവരി 26, 2007 ലാണ് ഇത് Un ഓഫീസിന്റെ എതിർവശത്തായി സ്ഥാപിച്ചത്. 39 അടിയാണ് ഈ കസേരയുടെ ഉയരം. ലാൻഡ് മൈൻസ്, ക്ലസ്റ്റർ ബോംബുകൾ എന്നിവയ്ക്കെതിരെയുള്ള എതിർപ്പ് പ്രകടിപ്പിക്കാനാണ്, വെറും മൂന്നുമാസത്തെ ആവശ്യത്തിനു വേണ്ടി ഇതു നിർമ്മിച്ചത്. പിന്നീട് ഒരുപാട് ആളുകളെ ഈ കസേര വശീകരിക്കുകയും, അത് Un ഓഫീസിനു മുൻപിൽ സ്ഥിരമായി പ്രദർശിപ്പിക്കാൻ തീരുമാനമെടുക്കുകയും ചെയ്തു. ഡയാനാ രാജകുമാരിയും ഈ പ്രസ്ഥാനത്തെ പ്രോത്സാഹിപ്പിച്ചിരുന്നു.

Un ഓഫീസ് കൂടാതെ ഞങ്ങൾ UNICEF ഹെഡ് ക്വാർട്ടേഴ്സ്, World Trade Organisation, World meteriological Association, office for the coordination of Humanitarian Affairs (OCHA) എന്നിങ്ങനെ പല പ്രമുഖ സ്ഥാപനങ്ങളും കണ്ടു.

റോഡിലൂടെ ഓടുന്ന മനോഹരമായ ചെറുതീവണ്ടികൾ -ട്രാമുകൾ-കണ്ടു. വാഹനങ്ങളെല്ലാം left hand drive ആണ്. (ലണ്ടനിലൊഴികെ മറ്റു യൂറോപ്യൻ രാജ്യങ്ങളിലെല്ലാം left hand drive ആയിരുന്നു.)

അന്നുരാത്രി Villars എന്ന ഗ്രാമത്തിലെ Eurotel Victoria എന്ന ഹോട്ടലിലാണ് ഞങ്ങൾക്ക് താമസം ഒരുക്കിയിരുന്നത്. അതിമനോഹരമായ ഗ്രാമമായിരുന്നു Villars. ഹോട്ടലിലേക്കു പോകുന്ന റോഡ് മലകൾക്കിടയിലൂടെ, വയനാടൻ ചുരം റോഡുപോലെ, വളഞ്ഞു പുളഞ്ഞാണ് പോകുന്നത്. ഹെയർപിൻ വളവുകൾ ഒന്നു രണ്ടെണ്ണമേയുണ്ടായിരുന്നുള്ളൂ. രണ്ടു വശങ്ങളിലും പച്ചപ്പുൽത്തകിടിയും, പുല്ലുമേയുന്ന പശുക്കളും, മനോഹരമായ കോട്ടേജുകളും. ദൂരെ മഞ്ഞണിഞ്ഞ മാമലകൾ. റോഡിലൂടെ വല്ലപ്പോഴും ഒന്നോ രണ്ടോ കാറുകൾ കടന്നുപോയെങ്കിലായി.

വൈകിട്ട് ആറു മണിയോടെ ഞങ്ങൾ യൂറോടെൽ ഹോട്ടലിലെത്തിച്ചേർന്നു. ചൂടു വെള്ളത്തിൽ ഒരു കുളി പാസ്സാക്കിയതോടെ യാത്രാക്ഷീണമെല്ലാം പമ്പ കടന്നു. മുറിയിൽ ചായ ഉണ്ടാക്കിക്കുടിക്കാനുള്ള കെറ്റിലും , ക്രീമർ, ടീബാഗുകൾ എന്നിവയൊക്കെ ഉണ്ടായിരുന്നു. ചൂടുചായയും, ചക്കവറുത്തതും (Made in Azchavattom!) കഴിച്ചു എന്തുരുചി !

ചായ കുടിച്ചുകഴിഞ്ഞ് ഞങ്ങൾ സ്വെറ്ററും ധരിച്ച് സായാഹ്നസവാരിക്കു പുറപ്പെട്ടു. ഞങ്ങളുടെ ഹോട്ടലിനടുത്തുള്ള പബ്ബിൽ വയസ്സന്മാരായ കുറെ ആളുകൾ കൂടിയിരുന്ന് ഗിറ്റാർ വായിക്കുകയും,പാട്ടുപാടുകയും, ഒപ്പം അല്പം ലഹരി അകത്താക്കുകയും ചെയ്യുന്നതു കണ്ടു. അവർ ജീവിതം ആസ്വദിക്കുകയായിരുന്നു. സന്തോഷവും ആരോഗ്യവും, ചിരികളും നിറഞ്ഞ ആ ഗ്രൂപ്പിനെ കണ്ടപ്പോൾതന്നെ സന്തോഷം തോന്നി.

പലയിടത്തും കളകളാരവം പൊഴിച്ചുകൊണ്ട് ഒഴുകുന്ന അരുവികളും പാലങ്ങളും പൈൻമരക്കാടുകളും കണ്ടു. പക്ഷികൾ കൂടു തേടി പറക്കുന്നു. രാത്രി 8 മണിയായിട്ടും ഇരുട്ടിയിരുന്നില്ല. തണുപ്പ് സഹിക്കാൻ വയ്യാതായപ്പോൾ ഞങ്ങൾ ഹോട്ടലിലേക്ക് മടങ്ങി. ഡൈനിംഗ് റൂമിൽ പോയി, ഞങ്ങളുടെ ഗ്രൂപ്പിനു വേണ്ടി ഒരുക്കിയിരുന്ന ചൂടുള്ള, രുചിയേറിയ ഇന്ത്യൻ ഡിന്നർ കഴിച്ചു. അതും കഴിച്ച് മുറിയിലേക്ക് പോയി. നാളെ ഞങ്ങൾ വളരെ തണുപ്പുള്ള GLACIER - 3000 എന്ന, ആൽപ്സിലെ ഒരു പർവ്വതം കാണാൻ പോവുകയാണ്. അഞ്ച് ലെയർ വസ്ത്രങ്ങളണിഞ്ഞാലേ കഠിനമായ തണുപ്പിനെ ചെറുക്കാൻ പറ്റുകയുള്ളൂ. ഞങ്ങൾ സ്വെറ്റർ, ജാക്കറ്റ്, തെർമൽവെയറുകൾ, ഗ്ലൗസ്, രണ്ടു സെറ്റ് സോക്സ്, ഷൂസ്, ചുണ്ടകളിൽ പുരട്ടാൻ ലിപ് കെയർ എന്നിവയൊക്കെ ഒരുക്കിവച്ചിട്ടാണ് ഉറങ്ങാൻ പോയത്.

അപ്പോഴും ആൽപ്സ് പർവ്വതത്തിനു മുകളിൽ അവസാനത്തെ സൂര്യരശ്മികൾ പ്രകാശം പരത്തിക്കൊണ്ടിരുന്നു.

GLACIER - 3000.

24/4/17 തിങ്കൾ

ഞങ്ങളുടെ യൂറോപ്യൻ പര്യടനത്തിന്റെ പതിനാലാം ദിവസമാണിന്ന്. പശ്ചിമ സ്വിറ്റ്സർലന്റിന്റെ Diablerets എന്ന ഭാഗത്തുള്ള ആൽപ്സ് പർവ്വതത്തിന്റെ 2971 മീറ്റർ ഉയരമുള്ള ഒരു ഭാഗത്തേക്കാണ് ഞങ്ങളുടെ യാത്ര. വർഷത്തിൽ 365 ദിവസവും മഞ്ഞുമൂടിക്കിടക്കുന്ന ഈ ഭാഗത്തിന് Gstaad 3000 (സ്റ്റാഡ്) എന്നും പേരുണ്ട്. 1964 ലാണ് ഇവിടെ ആദ്യമായി കേബിൾ കാറിന്റെ പ്രവർത്തനം ആരംഭിച്ചത്. 1999ൽ പഴയ കേബിൾ കാറിന്റെ കാറുകളെല്ലാം പുതിയവയ്ക്ക് വഴിമാറിക്കൊടുത്തു. സമുദ്രനിരപ്പിൽ നിന്നും 3000 മീറ്ററോളം ഉയരത്തിലുള്ള മഞ്ഞുമലയായതുകൊണ്ടാണ് Glacier 3000 എന്നു വിളിക്കുന്നത്.

ഞങ്ങൾ ഡൈനിംഗ് റൂമിൽ നിന്നും പാൻകേക്ക്, ധാരാളം dry fruits, ബ്രെഡ്, തേൻ തുടങ്ങിയ, ധാരാളം ഊർജ്ജം പകരുന്ന ഭക്ഷണം കഴിച്ചു. തണുപ്പിനെ പ്രതിരോധിക്കാൻ നന്നായി ഭക്ഷണം കഴിച്ചേപറ്റൂ. എല്ലാവരും നാലഞ്ചു ലെയർ വസ്ത്രങ്ങൾ ധരിച്ച് തണുപ്പിനെ നേരിടാൻ സന്നദ്ധരായിട്ടാണ് വന്നിരിക്കുന്നത്.

8 മണിയോടെ ഞങ്ങൾ ഹോട്ടൽ യൂറോടെല്ലിനോട് വിട പറഞ്ഞു. ഒരിക്കൽ കൂടി വളഞ്ഞുപുളഞ്ഞുപോകുന്ന റോഡിലൂടെ യാത്ര ചെയ്ത് പ്രധാന റോഡിലേക്കു കടന്നു.

ഏതാണ്ട് 45 മിനിറ്റെടുക്കും കേബിൾകാർ സ്റ്റേഷനിലെത്താൻ എന്ന് ഗൈഡ് പറഞ്ഞു.

ഇന്നലെ കണ്ട "വീവേ" (vevey) എന്ന ചെറുപട്ടണത്തെപ്പറ്റി പറയാൻ മറന്നുപോയി. ജനീവ തടാകത്തിന്റെ വടക്കുവശത്ത് സ്ഥിതി ചെയ്യുന്ന പ്രശാന്ത മനോഹരമായ ചെറിയ പട്ടണമാണ് വിവേ. കോമഡി കഥാപാത്രങ്ങളെ അവതരിപ്പിച്ച് വിശ്വപ്രസിദ്ധനായ ചാർളി ചാപ്ലിൻ, 1952 മുതൽ 1977 വരെ ഈ പട്ടണത്തിലാണ് താമസിച്ചത്. അതുകൂടാതെ Nestle' (നെസ്ലെ) യുടെ ഹെഡ്ക്വാർട്ടേഴ്സും ഇവിടെയാണ്. 1867 ലാണ് നെസ്ലെ ഇവിടെ പ്രവർത്തനമാരംഭിച്ചത്. പിന്നീട് പടർന്നു പന്തലിച്ച് ലോകപ്രസിദ്ധിയാർജ്ജിച്ച food giant ആയി മാറി. 1875 ൽ ഡാനിയൽ പീറ്റർ മിൽക്ക് ചോക്ലേറ്റ് ആദ്യമായി വീവേയിൽ നിർമ്മിച്ചു.

ചാർളി ചാപ്ലിൻ, തന്റെ ജീവിതത്തിലെ കാൽ നൂറ്റാണ്ടുകാലം ജീവിച്ച വിവേയിൽ അദ്ദേഹത്തിന്റെ പ്രതിമ സ്ഥാപിച്ചിട്ടുണ്ട്.

ഞങ്ങൾ 8.45 ന് കേബിൾ കാർ സ്റ്റേഷനിലെത്തി. സമുദ്രനിരപ്പിൽ നിന്ന് 1546 മീറ്റർ ഉയരത്തിലുള്ള col du Pillon എന്ന സ്ഥലത്തുനിന്നാണ് കേബിൾ കാർ യാത്ര ആരംഭിക്കുന്നത്. അവിടെ നിന്ന് ആദ്യത്തെ കേബിൾ കാർ യാത്രക്കാരെ cabane എന്ന മറ്റൊരു സ്റ്റേഷനിലെത്തിക്കും. സമുദ്രനിരപ്പിൽ നിന്നും

2525 മീറ്റർ ഉയരത്തിലാണ് ഈ സ്റ്റേഷൻ. ഇവിടെ നിന്നും രണ്ടാമത്തെ കേബിൾകാർ യാത്ര തുടരും. Scex Rouge എന്ന, 2971 മീറ്റർ (ഏകദേശം 3000 മീറ്റർ) ഉയരത്തിലുള്ള സ്റ്റേഷനിലേക്കാണ് മറക്കാൻ പറ്റാത്ത ഈ യാത്ര. രണ്ടുകേബിൾ കാറുകൾക്കും, ഉറച്ചുകിടക്കുന്ന മഞ്ഞിലൂടെ Snow bus ൽ യാത്ര ചെയ്യാനും ഒരു ടിക്കറ്റ് മതി. ടിക്കറ്റിന്റെ കൂടെ എല്ലാവർക്കും സൺഗ്ലാസ്സും കിട്ടി (Free ; അത് തിരിച്ചുകൊടുക്കണ്ട.)

ഒരു കേബിൾ കാറിൽ 125 പേർക്കു കയറാം! 1800 കിലൊഗ്രാം വരെ ഭാരം താങ്ങാനുള്ള ശേഷിയുണ്ട് ഈ കേബിൾ കാറിന്. കേബിൾ കാറിൽ നിന്നുള്ള കാഴ്ച അവർണ്ണനീയം! എവിടെ നോക്കിയാലും മഞ്ഞണിഞ്ഞു നിൽക്കുന്ന ഗിരിശൃംഗങ്ങൾ മാത്രം. Terrace എന്ന സ്ഥലത്തു നിന്നും മലമ്പുഴ ഡാമിലുള്ള തരം യന്ത്ര ഊഞ്ഞാലിൽ കയറ്റി ഒരു പർവ്വതത്തിന്റെ ചുവട്ടിലെത്തിച്ചു. അവിടെ ഞങ്ങൾക്ക് രണ്ടുമണിക്കൂർ ഇഷ്ടം പോലെ ചില വഴിക്കാം. ഇവിടെ ഓക്സിജന്റെ കുറവ് അനുഭവപ്പെടാത്തതുകൊണ്ട് മഞ്ഞിൽ കളിക്കാനും, ഉരുണ്ടു മറിയാനും തടസ്സങ്ങളൊന്നുമില്ല.

ഞങ്ങൾ യന്ത്ര ഊഞ്ഞാലിൽ നിന്നിറങ്ങി മഞ്ഞിൽ നടക്കാനിറങ്ങി. ചില യന്ത്രങ്ങൾ ഇളകിക്കിടക്കുന്ന മഞ്ഞിനെ അടിച്ചമർത്തി, നമുക്ക് ടാറിട്ട റോഡിലൂടെ എന്നതു പോലെ നടക്കാൻ വഴിയൊരുക്കിക്കൊണ്ടിരുന്നു. ആ വഴിയുടെ രണ്ടുവശത്തും പ്ലാസ്റ്റിക്കിന്റെ വടം വലിച്ചുകെട്ടിയിട്ടുണ്ട്. അവിടെ ചവിട്ടിയാൽ ചിലപ്പോൾ മുട്ടറ്റം മഞ്ഞിൽ കാൽ പുതഞ്ഞുപോകും. (അന്നത്തെ ഊഷ്മാവ് -5° C ആയിരുന്നു.)

ഒരു മലയുടെ വശത്തായി ചിലർ "ശൂന്ന്" അതിവേഗത്തിൽ നിരങ്ങിപ്പോകുന്നതും, പൊട്ടിച്ചിരിക്കുന്നതും കണ്ടു. അവിടെ എന്താണ് സംഭവിക്കുന്നതെന്നറിയാൻ ഞങ്ങളങ്ങോട്ടു നടന്നു. അല്പം കുഴിഞ്ഞ പ്ലാസ്റ്റിക് പ്ലേറ്റിൽ (ഏതാണ്ട് 1 ½ അടി ഡയമീറ്റർ), മലമുകളിൽ വച്ച് കയറിയിരിക്കണം. പിന്നെ "ശൂ"ന്ന് മഞ്ഞിലൂടെ താഴേക്ക് പാഞ്ഞിറങ്ങണം. നല്ലരസം. വഴിയിൽ ആരെങ്കിലും നിൽക്കുന്നുണ്ടെങ്കിൽ കൂട്ടിയിടിക്കാനും, രണ്ടുപേരും വീഴാനും സാധ്യതയുണ്ട്. ഞങ്ങളും കൊച്ചുകുട്ടികളെപ്പോലെ ഓരോ പ്ലാസ്റ്റിക് പ്ലേറ്റ് കരസ്ഥമാക്കി മലമുകളിലേക്കു നടന്നു. അതിൽ കയറിയിരുന്ന്, മഞ്ഞിലൂടെ ഒറ്റപ്പാച്ചിൽ! ഇടയ്ക്ക് ബ്രേക്കിടാനൊന്നും നിവൃത്തിയില്ല- സമനിരപ്പായ സ്ഥലത്തെത്തുമ്പോൾ തനിയെ നിൽക്കും.

ഞങ്ങൾ അഞ്ചാറുപേർ ചേർന്ന് മഞ്ഞുമനുഷ്യനെ ഉണ്ടാക്കി. മഞ്ഞിൽ Glacier 3000 എന്നെഴുതി, ഞങ്ങളുടെ പേരുമെഴുതി. അതിനടുത്തിരുന്നും കിടന്നും ഫോട്ടയെടുത്തു.

Snow bus യാത്ര രസകരമായിരുന്നു. മഞ്ഞിലൂടെ യാത്ര ചെയ്യുന്ന, പാറ്റൺ ടാങ്കുപോലത്തെ ഒരു വാഹനമാണ് സ്നോബസ്സ്. ഒരു സമയം 20 പേർക്ക് യാത്ര ചെയ്യാം. രണ്ടു ബസ്സുകളാണ് സർവ്വീസ് നടത്തിക്കൊണ്ടിരുന്നത്.

അതിൽ കയറാൻ കുറച്ചു സമയം ക്യൂ നിൽക്കേണ്ടിവന്നു. ഗോഗിൾസ് ധരിക്കാതെ മഞ്ഞിലൂടെ യാത്ര ചെയ്യാൻ പറ്റുകയില്ല. എവിടെ നോക്കിയാലും വെട്ടിത്തിളങ്ങുന്ന മഞ്ഞു മാത്രം.

Snow bus ലെ യാത്ര കഴിഞ്ഞ് ഞങ്ങൾവീണ്ടും യന്ത്ര ഊഞ്ഞാലിൽ കയറി Terrace എത്തി. അവിടെ നിന്ന് അല്പം നടന്ന "PEAK WALK"എന്ന അത്ഭുതകരമായ പാലത്തിനടുത്തെത്തി.

PEAK WALK: സ്വിസ്സ് ആൽപ്സിലെ രണ്ടു പർവ്വതാഗ്രങ്ങളെ ബന്ധിപ്പിക്കുന്ന സസ്പെൻഷൻ ബ്രിഡ്ജാണ് (തൂക്കുപാലം) Peak walk. Scex Rouge എന്ന പർവ്വതത്തെ മറ്റൊരു പർവ്വതവുമായി ഈ പാലം ഘടിപ്പിക്കുന്നു. ലോകത്തിൽ ഇത്തരത്തിൽ ആദ്യമായാണ് ഇങ്ങനെയൊരു തൂക്കുപാലം. Seiler AG steel and metal. Constructions ആണ് ഇതിന്റെ നിർമ്മാതാക്കൾ. ഈപാലത്തിന് 107 മീറ്റർ നീളവും, 0.8 മീറ്റർ വീതിയും, 1.2 മീറ്റർ ഉയരവുമുണ്ട്. രണ്ടു പർവ്വതങ്ങളിലുമായി നാലുകാലുകൾ ഉറപ്പിച്ച്, സ്റ്റീൽ കേബിളുകൾ വലിച്ചു കെട്ടിയാണ് പാലം നിർമ്മിച്ചിരിക്കുന്നത് 120 ടൺ ഭാരം താങ്ങാനുള്ള ശേഷിയുണ്ട് പാലത്തിന്. 1.8 മില്യൺ ഫ്രാങ്കാണ് നിർമ്മാണച്ചിലവ്. ഒരേ സമയം 300 പേർക്ക് പാലത്തിൽ കയറാമെങ്കിലും, 150 പേരെയാണ് ഇപ്പോൾ പ്രവേശിപ്പിക്കുന്നത്. 200 KMPH വരെ വേഗതയുള്ള കാറ്റിനെ പ്രതിരോധിക്കാനുള്ള ശേഷിയുണ്ട് ഈ പാലത്തിന്. ഈ പാലത്തിൽ നിന്നുകൊണ്ട് ആൽപ്സ് പർവ്വത നിരയിലെ Mont Blanc, Matterhorn, M'o'nch, Jungfrau, Eiger എന്നീ വമ്പന്മാരെ കാണാം. ഏതു ദിശയിൽ നോക്കിയാൽ ഏതു പർവ്വതം കാണും എന്ന് വലിയൊരു മാപ്പ് അവിടെ പ്രദർശിപ്പിച്ചു വച്ചിട്ടുണ്ട്. നല്ല തെളിഞ്ഞ ദിവസമാണെങ്കിൽ മാത്രമേ ഇതു സാദ്ധ്യമാകൂ. പാലത്തിന്റെ അടിവശം (നമ്മൾ നടക്കുന്ന ഭാഗം) കട്ടിയുള്ള ഗ്ലാസ്സും, സ്റ്റീൽ വയറുകളും കൊണ്ട് നിർമ്മിച്ചതാണ്. അതുകൊണ്ട് രണ്ടു പർവ്വതങ്ങൾക്കിടയിലുള്ള അഗാധ ഗർത്തം കാണാം. അതു കാണുമ്പോൾ ചെറിയൊരു ടെൻഷൻ തോന്നും. ചിലർക്ക് തലകറക്കവും. ഞങ്ങളുടെ ടീമിലെ പലരും ബ്രിഡ്ജിൽ കയറിയതേയില്ല.

തൂക്കുപാലത്തിന്റെ ഒരറ്റത്തു കൂടെ പാലത്തിലേക്കു കടന്ന്, രണ്ടു വശത്തുമുള്ള കൈവരിയിൽ പിടിച്ച് ഞങ്ങൾ സാവധാനം നടന്നു. താഴേക്കു നോക്കാതെ, നേരെ മുൻപിലേക്ക് ദൃഷ്ടികളൂന്നി നടന്നപ്പോൾ ഒരു പ്രശ്നവും തോന്നിയില്ല. ശക്തമായ തണുത്ത കാറ്റ് പാലത്തിനെ ഇളക്കിക്കൊണ്ടിരുന്നു. പാലത്തിന്റെ മറ്റേയറ്റത്ത്, പർവ്വതമുകളിൽ ചെറിയൊരു ടെറസ് ഉണ്ട്. അതിനു നടുവിൽ സ്വിറ്റ്സർലണ്ടിന്റെ പതാകയുമേന്തി ഒരു കൊടി മരം നാട്ടിയിട്ടുണ്ട്. പതാക കാറ്റിൽ പറക്കുന്നതു കാണാൻ നല്ലഭംഗി. (ചുവന്നപതാകയിൽ , വെള്ള നിറത്തിൽ പ്ലസ് ചിഹ്നമുള്ളതാണ് സ്വിസ്സ് ഫ്ളാഗ്.) ഈ കൊടിമരത്തിന്റെ ചുവട്ടിൽ TISSOT എന്ന വാച്ച് കമ്പനിയുടെ വലിയൊരു വാച്ചിന്റെ മോഡലും

പ്രദർശിപ്പിച്ചുവച്ചിട്ടുണ്ട്. കൊടിമരത്തിനു ചുറ്റും നടന്ന് ആൽപ്സിന്റെ ഗാംഭീര്യം നുകർന്നു. തണുത്ത കാറ്റിന്റെ പ്രഹരം സഹിക്കാൻ വയ്യാതെ വേഗം തിരിച്ചു നടന്നു.

പർവ്വതത്തിനു മുകളിൽ Restaurant Botta 3000 എന്ന ഭക്ഷണശാലയുണ്ട്. അവിടെ കുറച്ചു നേരം കാത്തിരുന്നു. Cox and Kings ന്റെ വേറൊരു ഗ്രൂപ്പും അവിടെയെത്തിയിരുന്നു. അവർ കഴിച്ചതിനുശേഷം, ഞങ്ങളും കഴിച്ചു. ഞങ്ങൾക്കുവേണ്ടി ഒന്നാം തരം ഇന്ത്യൻ ഭക്ഷണം അവിടെ ഒരുക്കിയിരുന്നു. റൈസ്, രോട്ടി, പാലക്, ദാൾ, ഫ്രഞ്ച് ഫ്രൈസ്, തൈര്, പഴങ്ങൾ, സാലഡ്, സലാഡ്, ഐസ്ക്രീം എന്നിവ എല്ലാവരും രുചിയോടെ കഴിച്ചു.

ഭക്ഷണം കഴിച്ചതിനുശേഷം ഞങ്ങൾരണ്ടു കേബിൾ കാറുകളിലായി മലയടിവാരത്തിലേക്ക് യാത്ര ചെയ്തു. ഉച്ചയ്ക്ക് 1.30 ന് ഞങ്ങൾ Coldu Pillion തിരിച്ചെത്തി. ഒരു കാഴ്ച എന്നെ പിടിച്ചുനിർത്തി. മുത്തച്ഛന്റെ കൂടെ സ്കീയിംഗ് പഠിക്കാൻ ഒരുകൊച്ചുബാലിക, അവളുടെ കുഞ്ഞു സ്കീയിംഗ് ബോർഡുമായി കാറിൽ വന്നിറങ്ങി. അവളെക്കണ്ടാൽ ഒരു സുന്ദരി മാലാഖയെപ്പോലുണ്ട്. നാലോ അഞ്ചോ വയസ്സുള്ള, സ്വർണ്ണത്തലമുടിയും, നീലക്കണ്ണുകളുമുള്ള ആ കുട്ടിയോടൊപ്പം ഒരു ഫോട്ടോയെടുക്കാൻ എനിക്കു കൊതി തോന്നി. മുത്തച്ഛന്റെ അനുവാദത്തോടെ ഞാൻ ആ കുട്ടിയുടെ കൂടെ ഫോട്ടോയെടുത്തു.

മുത്തച്ഛൻ നിർബന്ധിച്ചപ്പോൾ അവൾ നാണത്തോടെ എന്റടുത്തു വന്നു നിന്നു. സ്കീയിംഗും, മലകയറ്റവും അന്നാട്ടിലെ കുട്ടികളുടെ ജന്മാവകാശമാണെന്നു പറയാം.

ഞങ്ങൾ ഇനി പാരീസിലേക്കാണ് പോകുന്നത്. ഏതാണ്ട് 600 കിലോമീറ്റർ യാത്രയുണ്ട്. 7 മണിക്കൂർ വേണ്ടി വരും പാരീസിലെത്താൻ.

ജനീവ തടാകത്തിനടുത്തുകൂടിയായിരുന്നു ഞങ്ങളുടെ മടക്കയാത്ര. ആകാശം നീലനിറമാർന്ന്, തെളിഞ്ഞുകാണപ്പെട്ടു. ജെറ്റ് പ്ലെയ്നുകളിൽ നിന്നു വമിച്ച പുക രണ്ടു വാലുപോലെ ആകാശത്ത് കാണപ്പെട്ടു. ചിലയിടത്ത് തലങ്ങും വിലങ്ങും പുകച്ചുരുകൾ കണ്ടു.

2.45 ന് Pm ഞങ്ങൾ സ്വിസ്സ്-ഫ്രാൻസ് ബോർഡർ കടന്നു. 3.15 Pm ന് Mc Donalad's ൽ ഒരു ചെറിയ വിശ്രമത്തിനായി ബസ്സ് നിർത്തി. ഞങ്ങൾ ഓരോ ചൂടു കാപ്പിയും കുടിച്ചു.

മഞ്ഞണിഞ്ഞ മാമലകൾ പതുക്കെ കാഴ്ചയിൽ നിന്നു മറഞ്ഞു. പകരം താഴ്വരകളും പച്ചപ്പുൽമേടുകളും പ്രത്യക്ഷപ്പെട്ടു. നല്ല വൃത്തിയുള്ള, നല്ല രീതിയിൽ സംരക്ഷിക്കപ്പെട്ട റോഡുകൾ. റോഡരികിൽ കടകളും വീടുകളും കൂടുതൽ കണ്ടുതുടങ്ങി. സ്വിറ്റ്സർലണ്ടിൽ എല്ലാ വീടുകളും മരത്തിൽ നിർമ്മിച്ചവയായിരുന്നു. ഫ്രാൻസിലെ വീടുകൾ ഓടുമേഞ്ഞവയായിരുന്നു. ഇടയ്ക്കിടയ്ക്ക് കൊച്ചു വനങ്ങളും കണ്ടു. നഗരപ്രദേശങ്ങളിൽ RC വീടുകളും, ഫ്ളാറ്റുകളും കണ്ടു.

Glacier 3000 ൽ ഊഷ്മാവ് $^{-}5°C$ ആയിരുന്നു. ഇപ്പോൾ പുറത്ത്

ഊഷ്മാവ് 20° C ആണെന്ന് ബസ്സിലെ ഇലക്ട്രോണിക് ഇൻഡിക്കേറ്റർ കാണിച്ചു. ഞങ്ങൾ സ്വെറ്ററും ജാക്കറ്റും അഴിച്ചു വച്ചു. Dijon എന്ന പട്ടണത്തിൽ കടുകുപാടങ്ങൾ നോക്കെത്താദൂരത്തോളം പരന്നുകിടക്കുന്ന കാഴ്ച മനോഹരമായിരുന്നു. Dijon mustard വളരെ പ്രസിദ്ധമാണത്രെ.

വലിയൊരു ട്രക്കിൽ ഏഴു മസറാട്ടികാറുകൾ കൊണ്ടുപോകുന്നതു കണ്ടു. വളരെ വിലപിടിപ്പുള്ള കാറുകൾക്ക് ഒരുപോറൽ പോലുമേൽക്കാതിരിക്കാൻ, ഓരോന്നും വെവ്വേറെ പൊതിഞ്ഞാണ് പാക്ക് ചെയ്തിരുന്നത്.

വൈകിട്ട് Autogrill എന്ന gas station ൽ ബസ്സ് നിർത്തി. ഞങ്ങൾ washroom ൽ പോയി fresh ആയി. Latte (പാലുചേർത്ത കാപ്പി) കുടിച്ചു. ധാരാളം കഥാപുസ്തകങ്ങളും കളറിംഗ് ബുക്കുകളും കളർപെൻസിലുകളുമൊക്കെ വിൽപ്പനയ്ക്കുവച്ചിരുന്നു. പുസ്തകങ്ങൾ ഫ്രെഞ്ച് ഭാഷയിലുള്ളവയായിരുന്നു.

കടുകുപാടങ്ങൾ അടുത്തുനിന്നു കാണാൻ സൗകര്യം കിട്ടി. ഒരു പറ്റം കടുകുചെടികൾ കഴിഞ്ഞാൽ ട്രാക്ടറിനു കടന്നു പോകാൻ പാകത്തിൽ വഴിയുണ്ട് . വീണ്ടും ചെടികൾ. ട്രാക്ടറിൽ നിന്നും രണ്ടുവശത്തേക്കും നീണ്ട നിൽക്കുന്ന കൈകൾ. ഇവ ഉപയോഗിച്ച് വെള്ളം, വളം, കീടനാശിനി എന്നിവ തളിക്കാം. അതുപോലെ വിളവെടുപ്പും നടത്താം.

ഞങ്ങളുടെ ബസ്സ് ഷാംപെയ്ൻ ടൗണിലൂടെയാണ് ഇപ്പോൾ കടന്നു പോകുന്നത്. ഈ ടണലിലാണ് ആദ്യമായി വെട്ടിത്തിളങ്ങുന്ന വെള്ള വൈൻ നിർമ്മിച്ചു തുടങ്ങിയത്. ഈ പ്രദേശത്തിന്റെ പേരാണ് വീഞ്ഞിനു നൽകിയിരിക്കുന്നത്.

Chardonnay, Pinot noir, Pinot Meunier എന്നീ ഇനം മുന്തിരികൾ ഇവിടെ കൃഷി ചെയ്ത്, അതിൽ നിന്ന് വീഞ്ഞു ഉൽപ്പാദിപ്പിക്കുന്നു.

Dawat Indian Restaurant ൽ നിന്നാണ് അത്താഴം കഴിച്ചത്. അന്നത്തെ സ്പെഷ്യൽ ചിക്കൻ and veg. ബിരിയാണി. രാത്രി GOLDEN TULIP ഹോട്ടലിലെത്തി, വിശ്രമിച്ചു.

തുടരും

കൊങ്കണി പഴഞ്ചൊല്ലുകൾ

സമ്പാ : ഉമ വി.പൈ

ചോറാമ്ന് ചോറാ ഖത്താ.
ദാവെ ഹത്താന് കയ്ളാക് അമ്പുണാ.
കയ്ളാന് ബൈസൂക്യ് റുഖാഖന്ദൊ
മൊഡൂക്യ് ഏക് ജല്ലെ.
ഉശ്ണ് ബായറ് ഉസ്സോയാനാ, ഗാഡ്
മോണു ബിത്ത്രി കാഡൂക്യ്നാ.
ഹർവെ ഖത്തലാക് പിക്കലേ മെള്ളെ
അങ്കാരി അയ്യിലാക് ബൊൻബുനു ഗെത്ത്ലെ.
കുസ്സലെ മസ്സളേക്ക് പിക്കലി ചീംച് സട്ടൊ.
ദായി അസ്താനാ, ഹാത്തു ലസ്സൂകാവേ.
ഭർല്ലൊ കൾസൊ ചക്കുണ്ടെനാ
ബീ തെക്കീത് അത് ബാത്ത്

സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർ നേരിടുന്ന പ്രശ്നങ്ങളും പരിഹാരമാർഗ്ഗങ്ങളും

ബി.വസന്ത ഷേണായി

ആര്യവംശജരായ സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർ സനാതനധർമ്മാനുസൃതമായി നടത്തേണ്ടതായ അദ്ധ്യയനം അധ്യാപനം, യജനം-യാജനം, ദാനം-പരിഗ്രഹം എന്നീ ഷഡ്കർമ്മങ്ങൾ, യഥാവിധി നിർവ്വഹിച്ച് സമൂഹത്തിലും രാജകീയവൃത്തങ്ങളിലും അത്യധികം സ്വാധീനം ചെലുത്തുന്നവരും ആദരിക്കപ്പെട്ടവരുമായിരുന്നു. ലളിതമായ സാത്വിക ജീവിതം നയിച്ച് പൗരോഹിത്യം, പശുപാലനം, കൃഷി മുതലായ തൊഴിലുകളിൽ ഏർപ്പെട്ട്, ആചാരാനുഷ്ഠാനങ്ങൾ ലോപമില്ലാതെ മുറ പോലെ നടത്തുന്നവരുമായിരുന്നു. തങ്ങളുടെ ആധ്യാത്മിക നേതൃത്വം സ്വീകരിച്ചവരുടെ ഉത്കർഷത്തിനായി പ്രവർത്തിച്ച് 'പുരോഹിതർ' എന്ന സ്ഥാനം അന്വർത്ഥമാക്കി. സമൂഹത്തെ ധർമ്മനിരതവും ഈശ്വരോന്മുഖവും ആക്കുന്നതിൽ അവർ സ്വയം മാതൃകയായി നിസ്തുല പങ്ക് വഹിച്ചു വന്നു. എന്നാൽ ഇത് അവരുടെ പ്രാക്തന ചരിത്രം.

കാലത്തിന്റെ കുത്തൊഴുക്കിൽ എല്ലാതലത്തിലും മാറ്റം സംഭവിക്കുന്നത് പ്രകൃതി നിശ്ചയമാണല്ലോ. സാരസ്വതരുടെ കാര്യത്തിലും ഇത് സംഭവിച്ചു.

ആദ്ധ്യാത്മികതാ രഹിതമായ ഭൗതിക മുന്നേറ്റം ശാസ്ത്ര-സാങ്കേതിക വിദ്യകളിലുണ്ടായ അത്ഭുതകരമായ വളർച്ച എന്നിവയാൽ, സഹജമായ തന്റെ ദൗർബല്യത്തെ മനസ്സിലാക്കാതെ, പ്രകൃതിയെ വെല്ലു വിളിച്ച് തനിക്കെതിരായി ആരുമില്ല എന്ന ധാർഷ്ട്യത്തോടെ അനന്തര ഫലത്തെക്കുറിച്ച് ചിന്തിക്കാതെ ചെയ്ത് കൂട്ടുന്ന വിക്രിയകളുടെ ഫലം മനുഷ്യരാശി അനുഭവിച്ച് വരികയാണല്ലോ. ഇക്കാരണത്താൽ ഉണ്ടാവുന്ന പൊതു പ്രശ്നങ്ങൾ സാരസ്വതരും നേരിട്ട് വരുന്നു. എന്നാൽ ഇവയ്ക്ക് പുറമെ സ്വയം കൃതങ്ങളായ അനേകം പ്രതിസന്ധികളെയും നേരിട്ട് വരുന്നുണ്ട്.

തികച്ചും അപരിഹാര്യങ്ങളായ പ്രശ്നങ്ങളെക്കുറിച്ച് വ്യാകുലപ്പെടാതെ അവയെ സധൈര്യം എതിർക്കുക തന്നെ വേണം. നാം തന്നെ വരുത്തി വെച്ച വിനകളെ എങ്ങനെപരിഹരിക്കാമെന്ന് ചിന്തിച്ച് യുക്തമായ നടപടി എടുത്തേ പറ്റൂ. ഇവയ്ക്ക് ദൈവത്തേയോ, പ്രകൃതിയേയോ പഴി പറയുന്നതിൽ അർത്ഥമില്ല. ''എന്റെ ഉപ്പുപ്പായ്ക്ക്ഒരാനേണ്ടാർന്നു''എന്ന് സ്വന്തമായി ഒരു കുഴിയാനപോലും ഉണ്ടാക്കാൻ കഴിയാത്തവൻ ഊറ്റം കൊള്ളുന്നത് പോലെയാണ് ഗതകാല വൈഭവത്തെ അയവിറക്കി അഭിമാനിക്കുന്ന നിഷ്ക്രിയരായ സാരസ്വതരും.

രാജ്യത്തിന്റെ പല ഭാഗങ്ങളിലും അധിവസിച്ച് കാലക്രമേണ ദക്ഷിണ ഭാരതത്തിലേക്ക് കുടിയേറുമ്പോഴേക്കും സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർ മിക്കവരും വൈദികവൃത്തി ഉപേക്ഷിച്ച് ഉപജീവനത്തിനായി വ്യാപാരം, വ്യവസായം, ഉദ്യോഗം, കൃഷി മുതലായവ സ്വീകരിച്ചു കഴിഞ്ഞിരുന്നു. നിലയുറപ്പിച്ച പ്രദേശങ്ങളിലെ ജനങ്ങളുടേതിൽ നിന്നും തികച്ചും വ്യത്യസ്തമായ വേഷഭൂഷാദികൾ

സംസ്കാരം, ആചാരാനുഷ്ഠാനങ്ങൾ, ജീവിതശൈലി, സർവ്വോപരി മാതൃഭാഷ മുതലായവ നവാഗതരെ അന്യരായി അകറ്റി നിർത്താനിടയാക്കി. പേരിൽ ബ്രാഹ്മണർ എന്നുണ്ടെങ്കിലും കർമ്മത്തിൽ ബ്രാഹ്മണ്യം പ്രകടമായിരുന്നില്ലാത്തതിനാൽ തദ്ദേശിയർ സാരസ്വതരെ 'ബ്രാഹ്മണർ' എന്ന് അംഗീകരിച്ചില്ല. ഇവരെ ചെട്ടികൾ, കൊങ്കണികൾ, വൈശ്യർ എന്നെല്ലാം കണക്കാക്കി. കൊങ്കണി മാതൃഭാഷക്കാരായി സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണരെ മാത്രമേ ഇവിടത്തുകാർ ആദ്യമായി കണ്ടിട്ടുള്ളൂ എന്നതിനാൽ 'കൊങ്കണികൾ' സാരസ്വതരുടെ പേരായി. 'മലയാളി' എന്ന് ഭാഷ അടിസ്ഥാനമാക്കിയ പേര് പോലെയാണ് 'കൊങ്കണി' എന്നത് ഇവർക്കു അറിയില്ലായിരുന്നു. ആശയവിനിമയത്തിന് ഭാഷകൾ വലിയ തടസ്സവുമായിരുന്നു.

ഈ സ്ഥിതി വിശേഷത്തിന് മറ്റുള്ള വരെ കുറ്റപ്പെടുത്തിയിട്ട് കാര്യമില്ല. സാരസ്വതരിലും ബഹുഭൂരിപക്ഷത്തിനും തങ്ങളുടെ പൈതൃകം, പാരമ്പര്യം, സംസ്കാരം മുതലായവയെക്കുറിച്ച് ശരിയായ ധാരണയില്ലെന്നതാണ് സത്യം. അവയെക്കുറിച്ച് അറിയണമെന്ന ജിജ്ഞാസയും കുറവ്. സ്വന്തം മാതൃഭാഷയ്ക്ക് ലിപിയില്ലെന്നും ധരിക്കുന്നവർ ഏറെ. നമ്മുടെ മാതൃഭാഷാഭിമാനത്തെക്കുറിച്ച് മറ്റുള്ളവർക്ക് അസൂയയായിരുന്നുവെന്ന് പറയുന്നതിൽ തെറ്റില്ല. ലോകത്തിന്റെ ഏത് കോണിൽ വെച്ചും രണ്ട് കൊങ്കണികൾ കണ്ടുമുട്ടിയാൽ അവരുടെ കുശലാന്വേഷണം കൊങ്കണിയിലായിരിക്കും എന്നാണ് പറഞ്ഞിരുന്നത്. ഇന്ന് സ്ഥിതി നേരെ മറിച്ചാണ്. ഇപ്പോൾ കൊങ്കണികൾ വീട്ടിൽ പോലും സംസാരിക്കുന്നത് പ്രാദേശിക ഭാഷയിലാണ്. മറ്റുള്ളവരുടെ മുമ്പിൽ കൊങ്കണി സംസാരിക്കുന്നത് വലിയ നാണക്കേടായി പോലും കരുതുന്നു. നവാഗതരായ സാരസ്വതർക്ക് മുങ്ങിക്കുളിയില്ല, 'മാറ്റ്' സമ്പ്രദായമില്ല, അവർ മത്സ്യം കഴിക്കുന്നു എന്നെല്ലാമാണ് ആക്ഷേപം. തികച്ചും അടിസ്ഥാനമില്ലാത്തവയാണ് ഈ ധാരണകൾ. ഒന്നാമതായി ആചാരാനുഷ്ഠാനങ്ങളും ജീവിതശൈലിയും ഭക്ഷണ ക്രമവും മറ്റും സാർവ്വത്രികമായി സമാനമല്ലെന്ന കാര്യം അറിയാത്തവരാണ് ആക്ഷേപക്കാർ. ഇവയെല്ലാം രൂപപ്പെടുന്നത് അതാത് പ്രദേശത്തെ ഭൂപ്രകൃതി, കാലാവസ്ഥ, വിഭവ ലഭ്യത മുതലായവയെ ആശ്രയിച്ചാണ്. ഓരോ പ്രദേശക്കാരും വ്യത്യസ്തരായിരിക്കും. ഇക്കാര്യത്തിൽ സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണരുടെ മൂല സ്ഥാനം കേരളമോ, കർണ്ണാടകയോ അല്ലാത്തതിനാൽ സ്വാഭാവികമായും അവർ വ്യത്യസ്തരായിരിക്കും. വേറൊരു കാതലായ അപ്രിയ സത്യം പുരാതനകാലത്ത് ബ്രാഹ്മണർക്ക് മത്സ്യമാംസാദികൾ നിഷിദ്ധമായിരുന്നില്ലെന്ന് മാത്രമല്ല. അവ നിർബന്ധമായും അവശ്യ വസ്തുക്കളുമായിരുന്നു എന്ന വസ്തുത. വേദാംഗമായ കല്പസൂത്രത്തിലെ 'പശുകല്പവും'ദീപാരാധനാ സമയത്ത് മന്ത്രിക്കുന്ന 'പുരുഷസൂക്തവും' പരിശോധിച്ച് ഇത് ബോദ്ധ്യപ്പെടാവുന്നതാണ്. അതുപോലെ ശ്രീഭൂതബലി ഹോമാദികളിലുള്ള ആഹൂതി മുതലായവ വൈദിക ചടങ്ങുകളിൽ കുമ്പളങ്ങ, ഗുരുസി, ബലിച്ചോറ് മുതലായവ ഏതിന്റെ പ്രതീകങ്ങളാണെന്ന് ആലോചിക്കുക. ഉത്തരേന്ത്യയിൽ ബംഗാൾ പോലെയുള്ള പ്രദേശങ്ങളിലെ ബ്രാഹ്മണർ ശ്രാദ്ധത്തിന് പോലും മത്സ്യം ഉപയോഗിച്ച്

വരുന്നുണ്ട്. കാശ്മീർ, ഹിമാചൽ പോലെയുള്ളവരോട് 'മുങ്ങി'കുളിക്കാൻ പറയുന്നത് അപഹാസ്യമല്ലെ. ഇത്തരം കാര്യങ്ങളൊന്നും കണക്കിലെടുക്കാതെ സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണരെ താഴ്ത്തിക്കെട്ടി പറഞ്ഞ് കേരളം, കർണ്ണാടകം മുതലായ പ്രദേശവാസികൾ പ്രത്യേകിച്ച് ഇവിടത്തെ തദ്ദേശീയരായ ബ്രാഹ്മണ വർഗം കാണിക്കുന്ന അവഗണനയും വിവേചനവുമാണ് സാരസ്വതർ നേരിടുന്ന ഒരു പ്രശ്നം. ഇതിന് പരിഹാരം സ്വന്തം വ്യക്തിത്വം ശരിയായി മനസ്സിലാക്കി യാഥാർത്ഥ്യം മറ്റുള്ളവരെ ബോദ്ധ്യപ്പെടുത്തി മനോഭാവത്തിൽ മാറ്റം വരുത്താനുള്ള ശ്രമമാണ്.

കുടുംബ ഘടനയിലും ബന്ധങ്ങളിലും സംഭവിച്ച മാറ്റം വൻ പ്രശ്നങ്ങളാണ് സൃഷ്ടിച്ചിരിക്കുന്നത്. വിവാഹം, വയോജനങ്ങളുടെ രക്ഷ, തൊഴിൽ മുതലായവ സാരസ്വതരെ അലട്ടുന്ന പ്രശ്നങ്ങളാണ്. കൂട്ടുകുടുംബം ഇന്ന് അണുകുടുംബത്തിനും അതിസൂക്ഷ്മ കുടുംബത്തിനും വഴി മാറിയതിനാൽ മുമ്പത്തെ മുത്തശ്ശൻ, മുത്തശ്ശി, മക്കൾ, പേരമക്കൾ മുതലായവരടങ്ങിയിരുന്ന സന്തുഷ്ട കുടുംബം ഇപ്പോൾ അക്ഷരാർത്ഥത്തിൽ സന്തപ്ത കുടുംബങ്ങളാണ്. ഗൃഹനാഥന് കാലിൽ ഉറുമ്പ് കയറാൻ പോലും സമയമില്ലാത്ത അവസ്ഥ. മക്കൾ ഉന്നത വിദ്യാഭ്യാസം നേടി അന്യ സ്ഥലത്തും, വിദേശങ്ങളിലും ജോലി ചെയ്യുന്ന ചുറ്റുപാട്, നാട്ടിലുള്ള മക്കളും മറ്റും സ്വന്തം കുടുംബത്തോടൊപ്പം താമസിക്കുന്നത് മുതലായവ കഷ്ടപ്പെടുത്തുന്നത്, അവരെയെല്ലാം നോക്കി പോറ്റി സ്നേഹിച്ച് ലാളിച്ച് വളർത്തിക്കൊണ്ടു വന്ന വയോജനങ്ങളെയാണ്. ആ ഒരു കെട്ടുപിണഞ്ഞു നിൽക്കുന്ന അവസ്ഥയുമാണ്. ആരെയും കുറ്റപ്പെടുത്തുന്നത് ശരിയുമല്ല. ഒന്നിച്ച് പാർപ്പിക്കുന്നതിനുള്ള പ്രായോഗിക ബുദ്ധിമുട്ടുകൾ, ഉറ്റവരെയും ഉടയവരെയും ജനിച്ചു വളർന്ന വീടിനെയും മറ്റും ഉപേക്ഷിച്ച് അപരിചിതമായ സ്ഥലത്തേക്ക് പോകാനുള്ള വയോജനങ്ങളുടെ വിമുഖത മുതലായവ പ്രശ്നം രൂക്ഷമാക്കുന്നു. ഇതിന് എളുപ്പത്തിൽ പരിഹാരം കാണാൻ ഇന്ന് പൊതുവിലുള്ള പ്രവണത പ്രായമായവരെ ഏതെങ്കിലും വൃദ്ധസദനങ്ങളിൽ തള്ളി വിടുന്നതാണ്. ഇത് അവരോട് കാണിക്കുന്ന ക്രൂരമായ കൃതഘ്നതയെന്ന് ആരും ഓർക്കാറില്ല. ജീവിത സായാഹ്നത്തിൽ അവർക്ക് മാസം തോറും അയച്ചു കിട്ടുന്ന തുകയേക്കാൾ അത്യാവശ്യം ഒരിറ്റു സ്നേഹവും പരിഗണനയുമാണ്. സാരസ്വതർ ധർമ്മസങ്കടത്തിൽപെടുന്ന ഈ അവസ്ഥയ്ക്ക് പരിഹാരം സമുദായം തന്നെ ഏറ്റെടുക്കുന്നതാണ് ഉചിതം. ഒരു പ്രദേശത്ത് ഇത്തരം അനേകം പേർ പല കേന്ദ്രങ്ങളിലായി കാണും. അവരെയെല്ലാം ഒരു കേന്ദ്രത്തിൽ, കഴിയുന്നതും സമുദായ ക്ഷേത്ര പരിസരത്ത്, ജീവിത സൗകര്യങ്ങളൊരുക്കി ക്ഷേത്രത്തിന്റെയോ സമുദായ സംഘടനകളുടെയോ അതുമല്ലെങ്കിൽ ഉദാരമതികളായ സഹൃദയരായ സാമ്പത്തിക ശേഷിയുള്ള വ്യക്തികളുടെയോ മേൽനോട്ടത്തിൽ സംരക്ഷിക്കുന്നതാണ്. മക്കളും മറ്റും ഇവരുടെ ഉത്തരവാദിത്വം ഇങ്ങനെ കൈമാറി തങ്ങളുടെ കടമ തീർത്തു എന്ന് കരുതാതെ കൂടെക്കൂടെ സൗകര്യപ്പെടുമ്പോഴെല്ലാം സ്വന്തം കുടുംബത്തോടൊപ്പം ഇവരെ സന്ദർശിച്ച് സ്നേഹത്തോടെ കുശലാന്വേഷണം നടത്തുകയും അവരുടെ ക്ഷേമത്തെക്കുറിച്ച് അന്വേഷിച്ച്

വേണ്ടത് ചെയ്യാൻ അടുത്തുള്ള ബന്ധുക്കളോടും സ്നേഹിതരോടും അപേക്ഷിക്കുന്നത് ഈ വയോജനങ്ങളെ ഒറ്റപ്പെടലിൽ നിന്നുണ്ടാവുന്ന മനോവേദനഅകറ്റി സുരക്ഷിതത്വ ബോധമുണ്ടാക്കാൻ വളരെ പ്രയോജനപ്പെടും. വയോജനകേന്ദ്രങ്ങളുടെ സുഗമമായ നടത്തിപ്പിനുള്ള ചെലവ് സാമ്പത്തിക ശേഷിയുള്ള മക്കളും ബന്ധുക്കളും സംഘടനകളും വഹിച്ചേ പറ്റൂ. ആരാധനാലയങ്ങളും ഇത് ഈശ്വരാരാധനയുടെ ഒരു ഭാഗമായി കരുതേണ്ടതാണ്. നമ്മുടെ ഗുരുജനങ്ങളെ പൊതുവിൽ ഇന്ന് കാണുന്ന മറ്റ് വൃദ്ധസദനങ്ങളിൽ നടതള്ളി ഉത്തരവാദിത്വത്തിൽ നിന്ന് കൈകഴുകുന്നത് ഏറ്റവും നിന്ദ്യമായ കൃതഘ്നതയാണ്.

ഷോഡശ സംസ്കാരങ്ങളിൽ വെച്ച് ഏറ്റവും പ്രധാനപ്പെട്ടതായി മുമ്പ് കണക്കാക്കിയിരുന്നത് വിവാഹമായിരുന്നു. ആ ബന്ധത്തെ അത്യധികം പാവനമായി കരുതിയിരുന്നു. തലമുറകളുടെ പിൻതുടർച്ചയ്ക്കായി മക്കളുടെ വിവാഹം നടത്തിക്കേണ്ടത് പിതാവിന്റെ പ്രഥമ കർത്തവ്യവുമായിരുന്നു. പെൺകുട്ടികളുടെ വിവാഹം, കുട്ടി പ്രായപൂർത്തിയാകുന്നതിന് മുമ്പ് (മാനദണ്ഡം ഇന്നത്തേതല്ല) വിവാഹം ചെയ്ത് കൊടുത്തില്ലെങ്കിൽ കുടുംബത്തിനെഭ്രഷ്ട് കൽപിക്കുക പോലും ചെയ്യുന്നത് സാമൂഹിക നീതിയായിട്ടേ കരുതിയിരുന്നുള്ളൂ. അതിനാൽ കുട്ടികളുടെ വിവാഹം യഥാസമയം ബന്ധുക്കളുടെയും സമുദായത്തിന്റെയും അംഗീകാരത്തോടെ നടത്തിക്കുന്നതായിരുന്നു പതിവ്. ന്യായാധിപരും മന്ത്രിമാരുമൊക്കെ അധികാരമേൽക്കുമ്പോൾ ചെയ്യുന്ന പ്രതിജ്ഞ പോലെ വിവാഹ സമയത്ത് വധൂവരൻമാർ ചെയ്യുന്ന പ്രതിജ്ഞകൾ അലംഘനീയമായിട്ടാണ് കരുതിയിരുന്നത്. ജീവിത പങ്കാളികളാകുന്ന സ്ത്രീ പുരുഷൻമാർ പരസ്പരം സമഭാവനയോടെ സ്ത്രീയെ പുരുഷൻ ധർമ്മപത്നിയായും അർദ്ധാംഗിയായും, സ്ത്രീ പുരുഷനെദൈവതുല്യനായും ആണ് ഭാവിച്ചിരുന്നത്. കാലം മാറി സമൂഹത്തിന്റെ കാഴ്ചപ്പാടും മാറി. അതുകൊണ്ട് ഈ തലത്തിൽ തികഞ്ഞ അരാജകത്വവും ഉണ്ടായി. ഇന്ന് 'കുട്ടികളുടെ' വിവാഹത്തിന് പകരം യുവതീ യുവാക്കളുടെ വിവാഹം നടക്കുന്നു. കുട്ടികൾ വളർന്ന് വലുതായി സ്വന്തം കാര്യം തീരുമാനിക്കാൻ പ്രാപ്തരാകുന്നതിനാൽ മാതാപിതാക്കൾക്കോ രക്ഷിതാക്കൾക്കോ വിവാഹ നിശ്ചയത്തിൽ നാമമായ പങ്കേ നിറവേറ്റാനാകൂ.

വിവാഹ കാര്യത്തിൽ സാരസ്വതർ നേരിടുന്ന പ്രതിസന്ധി ഒട്ടുമുക്കാലും സ്വയംകൃതവുമാണ്. സ്ത്രീധനം, ജാതകപ്പൊരുത്തത്തിലുള്ള അതിരുകവിഞ്ഞ വിശ്വാസം, അനാവശ്യമായ ആർഭാടം മുതലായവയാണ് പ്രശ്നങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുന്നത്. ജ്യേഷ്ടാ നക്ഷത്രത്തിൽ ജനിച്ചവൾക്ക് വരൻ കുടുംബത്തിൽ ജ്യേഷ്ഠൻ തന്നെ വേണം. മൂലം നക്ഷത്രത്തിൽ ജനിച്ചവൻ കുടുംബത്തിന് നാശമുണ്ടാക്കും എന്നിങ്ങനെയുള്ളവ അബദ്ധധാരണകളാണ്. മുമ്പൊക്കെ മകൾക്ക് വരനെതേടി അച്ഛൻ പെടുന്ന പാട് എല്ലാവരുടെയും സഹതാപം നേടിയിരുന്നു. കഠിനപ്രയത്നം കൊണ്ട് വല്ല തരത്തിലും വരനെകണ്ടെത്തിയാൽ അടുത്ത കടമ്പ സ്ത്രീധനപ്രശ്നമാണ്. സ്നേഹിച്ച് വളർത്തിയ പെൺകുട്ടി വിവാഹിതയായി വേറൊരു കുടുംബാംഗമാകുന്നതിനാൽ സ്നേഹത്തിന്റെ പ്രതീകമായി കഴിവിന്നനുസരിച്ച് അച്ഛൻ കൊടുക്കുമായിരുന്ന തുക വരദക്ഷിണ എന്നാണറിയ

പ്പെട്ടിരുന്നു. എന്തു ദാനം ചെയ്യുമ്പോഴും സ്വീകർത്താവിന്ന് ദക്ഷിണ കൊടുക്കണമെന്ന വിശ്വാസമുണ്ട്. ഇതാണ് ഇപ്പോൾ 'സ്തീധനം' എന്ന പേരിൽ കരാള രൂപമെടുത്തിരിക്കുന്നത്. സ്വീകരിക്കുന്ന സ്ത്രീയെ പോറ്റാനുള്ള പുരുഷന്റെ ബാദ്ധ്യത നിറവേറ്റുന്നതായിരിക്കാം ഇതിന്റെ ഉദ്ദേശം. എന്തായാലും സ്ത്രീധനത്തോടുള്ള അത്യാർത്തി ഇന്ന് ഭയങ്കര ശാപമാണെന്നേ പറയാനുള്ളു. പ്രത്യേകിച്ചും ഇടത്തരം കുടുംബങ്ങൾക്കും പാവപ്പെട്ടവർക്കും. മകളുടെ വിവാഹം, ഉപനയനം, പിറന്നാൾ മുതലായ ആഘോഷങ്ങൾക്ക് സാമ്പത്തിക ശേഷിയുള്ളവർ കാണിക്കുന്ന അനാവശ്യ ആർഭാടവും ധൂർത്തും കണ്ട് ഇടത്തരക്കാരും പാവപ്പെട്ടവരും അതുപോലെ പ്രവർത്തിക്കുന്നതിന്റെ ഫലമെന്തെന്ന് പറയേണ്ടതില്ലല്ലോ. ചേര ഓടുന്നത് കണ്ട് ഞാഞ്ഞൂലും ഓടാൻ ശ്രമിക്കുന്നത് പോലെയാണത്. ആഘോഷങ്ങളുടെ ആദ്ധ്യാത്മിക മൂല്യങ്ങൾക്ക് കോട്ടം തട്ടാതെ കാര്യങ്ങൾ ഭംഗിയായി നിർവ്വഹിച്ച് ചെലവിനായി നീക്കിവച്ച തുകയിൽ മിച്ചം വച്ച് വധൂവരൻമാരുടെ പേരിൽ നിക്ഷേപിക്കുകയോ നിർദ്ധനകുടുംബത്തിലെ പെൺകുട്ടിയുടെ വിവാഹത്തിനായി സഹായിച്ച് അവരുടെ സന്തോഷത്തിൽ നിർവൃതി കൊള്ളുന്നതോ അല്ലേ അഭികാമ്യം.

സ്ത്രീധനസമ്പ്രദായത്തിനും ജാതകഭ്രമത്തിനും കഴിവിന്നതീതമായത് അനുകരിക്കുന്നതിനും എതിരെ സമുദായത്തിൽ ശക്തമായ അവബോധം സൃഷ്ടിക്കലാണ് ഇതിനുള്ള പ്രതിവിധികളിലൊന്ന്. ഇത് കുറ്റകരമായി പ്രഖ്യാപിച്ച് വാങ്ങുന്നതും കൊടുക്കുന്നതും ശിക്ഷാർഹമാക്കിയുള്ള നിയമം പലതും നിലവിലുണ്ട്. ഒന്നും ഫലപ്രദമല്ലെന്ന് മാത്രം. സർക്കാരുകൾ ഉണ്ടാക്കുന്ന നിർവ്വീര്യങ്ങളായ നിയമത്തിന് പകരം സമൂഹ മനസ്സാക്ഷിയെ ഇതിനെതിരെ ആക്കുകയാണ് ഫലപ്രദം. ഉന്നതവിദ്യാഭ്യാസം നേടി ഉയർന്ന സാമ്പത്തിക നിലയിലെത്തിയ യുവതീയുവാക്കൾ വിചാരിച്ചാൽ ഈ ദുഷിച്ച സമ്പ്രദായം ഇല്ലാതാക്കാൻ കഴിയും. സ്ത്രീധനം വാങ്ങി തനിക്ക് വിവാഹം വേണ്ടെന്ന് യുവാവും അതുകൊടുത്തു താൻ വിവാഹിതയാകില്ലെന്ന് യുവതിയും ദൃഢനിശ്ചയം ചെയ്യണം. മാത്രമല്ല യോഗ്യയായ ഒരു പാവപ്പെട്ട പെൺകുട്ടിയെ കെട്ടി ആ കുടുംബത്തിന് ആശ്രയമാകണമെന്ന് യുവാവും അതുപോലെ മനപ്പൊരുത്തമുള്ള നിർദ്ധനയുവാവിനെവരിച്ച് ആ കുടുംബത്തിന് താങ്ങും തണലുമാകണമെന്ന് യുവതിയും തീരുമാനിക്കുന്നത് അവർ ഈ ജന്മത്തിൽ എടുക്കുന്ന ശ്രേഷ്ഠകർമ്മമായിരിക്കും. മുമ്പ് പെൺകുട്ടിക്ക് വേണ്ടി ആണിനെതേടിയിരുന്നെങ്കിൽ ഇപ്പോൾ ആണിന് വേണ്ടി പെണ്ണിനെഅന്വേഷിക്കേണ്ട അവസ്ഥയാണ്. വിദ്യാഭ്യാസവും ജോലിയുമുള്ള യുവതികൾക്ക് അവർക്ക് യോജിച്ചവർ തന്നെ കിട്ടും. (സ്ത്രീധനത്തിന്റെ കാര്യത്തിൽ ഒരു വിട്ടുവീഴ്ചയുമുണ്ടാവില്ലെന്നത് മറ്റൊരു കാര്യം) ചെറുകിട കച്ചവടം, പീടികകളിലും മറ്റും ജോലി, മുതലായവയിൽ ഏർപ്പെട്ടവർക്ക് ഇന്ന് പെണ്ണുകിട്ടുന്നതിന് ഭഗീരഥ പ്രയത്നം നടത്തേണ്ടി വരുന്നു. വിവാഹ പ്രായം അതിക്രമിച്ച് മദ്ധ്യവയസ്സിൽ എത്തിയവർ പല കുടുംബങ്ങളിലും 'പുര നിറഞ്ഞു നിൽക്കുകയാണ്'. സമുദായത്തിൽ പെണ്ണിനെതേടി കിട്ടാത്തവർ ഗതികേടു കൊണ്ട് മിശ്രവിവാഹത്തിന് നിർബന്ധിതരാകുന്നു. ഇതിൽ അവരെ കുറ്റം പറയാൻ സാദ്ധ്യമല്ല. അവർക്കും ഒരു ജീവിതം വേണമല്ലോ. മിശ്ര

വിവാഹം പലപ്പോഴും യാഥാസ്ഥിതിക സമുദായത്തിൽ പിന്നീട് പ്രശ്നങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുന്നു. അതുപോലെയാണ് ആർഭാടമായി വിവാഹ നിശ്ചയം കഴിഞ്ഞ് ബന്ധം നടത്താതെ പോകുന്നതും, സാരസ്വതരുടെ പല കുടുംബങ്ങളും ഇക്കാരണത്താൽ മാനഹാനിയും ധനനഷ്ടവും മനോവ്യഥ പോലുള്ള നിത്യദു:ഖവും അനുഭവിക്കേണ്ടി വരുന്നുണ്ട്. ഇത്തരം പ്രശ്നങ്ങൾക്കെല്ലാം അടിസ്ഥാനകാരണം മുമ്പ് സൂചിപ്പിച്ചതു പോലെ വിവാഹബന്ധത്തെക്കുറിച്ചുള്ള ലാഘവത്തോടെയുള്ള കാഴ്ചപ്പാടാണെന്നത് നിസ്തർക്കമാണ്. സമുദായത്തിന്റെ കൂട്ടായ പ്രവർത്തനം മാത്രമേ ഇതിന് പരിഹാരമാകൂ.

പൊതുവിൽ കാണുന്ന തൊഴിലില്ലായ്മാ പ്രശ്നം സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണരും അഭിമുഖീകരിക്കുന്നു. മുന്നാക്ക ജാതിക്കാരാണ് എന്ന കാരണത്താൽ സർക്കാരുദ്യോഗം, ബാങ്ക് ജോലി മുതലായവ എത്ര ഉന്നതമായ യോഗ്യതയുണ്ടെങ്കിൽ പോലും പലർക്കും കിട്ടാക്കനികളാണ്. പ്രവൃത്തിപാടവം, കഠിനാദ്ധ്വാനശീലം മുതലായവ കൈമുതലാക്കിയവർ ഉദ്യോഗം തേടി വിദേശത്തേക്കും മറ്റും ചേക്കേറുന്നതിനു പകരം നാട്ടിൽ തന്നെ അഭിരുചിക്കനുസരിച്ച് സ്വയംതൊഴിലിൽ പ്രവേശിച്ച് കുടുംബത്തിനും രാജ്യത്തിനും ഒരു മുതൽക്കൂട്ട് ആകുന്നതാണ് ഒരു പരിഹാരം. എന്നാൽ ഇതിന് സാമ്പത്തികമായ പിൻബലം അത്യാവശ്യമാണ്. ഇവിടെയാണ് സമുദായത്തിലെ സഹൃദയരായ സാമ്പത്തിക ശേഷിയുള്ളവരുടെ പങ്ക്. തന്റെ ആവശ്യത്തിൽ കവിഞ്ഞ സമ്പാദ്യം സദുപയോഗം ചെയ്ത് കൃതാർത്ഥരാവാനുള്ള അവസരം മുതലെടുത്ത് അവർ സമർത്ഥരും അർഹരുമായ യുവതീ യുവാക്കളെ സാമ്പത്തികമായും മാർഗ്ഗനിർദ്ദേശം നൽകിയും ആവശ്യമായാൽ മേൽനോട്ടം വഹിച്ചും അനുയോജ്യമായ സ്വയംതൊഴിൽ ചെയ്യാൻ സഹായിക്കുക എന്ന പുണ്യകർമ്മം നിർവ്വഹിക്കണം. അങ്ങനെനമ്മുടെ ചെറുപ്പക്കാരുടെ സേവനം നാട്ടിൽ തന്നെ പ്രയോജനപ്പെടുത്തുകയാണെങ്കിൽ സമുദായത്തിലെ വയോജനങ്ങൾ നേരിടുന്ന പ്രശ്നം ഒരു പരിധി വരെ കുറക്കാനും കഴിയും.

ഇന്നത്തെ മുതിർന്ന തലമുറക്ക് നമ്മുടെ സംസ്കാരവും പാരമ്പര്യവും സംരക്ഷിച്ച് വലിയ കോട്ടമില്ലാതെ ഭാവി തലമുറയ്ക്ക് കൈമാറേണ്ട ഭാരിച്ച ഉത്തരവാദിത്വത്തെക്കുറിച്ച് ബോധം കുറഞ്ഞു വരുന്നു എന്നത് വലിയ പ്രശ്നമാണ്. സഹസ്രാബ്ദങ്ങളായി നിലനിന്നു വന്ന നമ്മുടെ തനിമയും സംസ്കാരവും മറ്റുമുള്ളതിന്റെ പ്രാധാന്യം യുവതലമുറയെ ബോദ്ധ്യപ്പെടുത്തേണ്ടത് അത്യാവശ്യമാണ്. ഇന്നത്തെപ്പോലെ പൊതുജനസമൂഹത്തിൽ നിന്നും തികച്ചും ഒറ്റപ്പെടാതെ നമ്മുടെ തനിമയെ കഴിയുന്നത്ര നിലനിർത്താൻ അവരെ പ്രാപ്തരാക്കേണ്ടതുണ്ട്. ഇതിന് ഉപദേശിച്ചിട്ടോ ഭീഷണിപ്പെടുത്തിയിട്ടോ അനുസരിപ്പിക്കുന്നതിന് പകരം നമ്മുടെ പ്രവർത്തികൾ കണ്ട് അവർക്ക് അനുകരിക്കാൻ സാഹചര്യമുണ്ടാക്കുന്നതാണ് സ്ഥായിയായ ഫലമുണ്ടാക്കുന്നത്. അതുകൊണ്ട് ഗൃഹനാഥൻ കുടുംബാംഗങ്ങൾക്ക് മാതൃകയായിതീരണം. ഇന്നത്തെ തിരക്കുപിടിച്ച ജീവിതത്തിൽ വീട്ടുകാരുമായി നിത്യേനകുറച്ചു സമയമെങ്കിലും സ്നേഹത്തോടെ പെരുമാറി അവരുടെ പ്രശ്നങ്ങളറിഞ്ഞ് പരിഹരിച്ചു കൊടുക്കുന്നതിന് നിർബന്ധമായും സമയം കണ്ടെത്തുന്നത് കുടുംബത്തിൽ

സന്തോഷവും സുരക്ഷിതത്വബോധവും ഉണ്ടാക്കും. നവോത്ഥാനം, പുരോഗമനം, സ്ത്രീപുരുഷ സമത്വം മുതലായവയുടെ പേരിൽ ഇന്ന് കാണുന്ന കോപ്രായങ്ങളിൽ മയങ്ങിപ്പോകാതെ സ്വന്തം പൈതൃകവും സംസ്കാരവും മനസ്സിലാക്കി പ്രവർത്തിക്കാൻ കുട്ടികളെ സഹായിക്കേണ്ടത് മുതിർന്നവർ സ്വന്തം പ്രവർത്തി കൊണ്ടാണ്. മദ്യം, മയക്കുമരുന്ന്, ദൃശ്യശ്രാവ്യമാധ്യമങ്ങൾ മുതലായവയുടെ അടിമകളാകാതിരിക്കാൻ കുട്ടികളുടെ മേൽ സദാ കണ്ണുവെച്ചില്ലെങ്കിൽ ദുരന്തമായിരിക്കും ഫലം.

ഭൗതികതലത്തിൽ നാം നേരിടുന്ന ചില പ്രശ്നങ്ങൾക്ക് പുറമെ ആദ്യാത്മികതലത്തിലും പരിഹാരം കാണേണ്ട ഗൗരവമേറിയ പ്രശ്നങ്ങളുണ്ട്. മനുഷ്യജീവിതത്തിന് തുല്യ പ്രാധാന്യമുള്ള രണ്ടു തലങ്ങളാണ് ഭൗതികവും ആത്മീയവും. ഇവ രണ്ടും ഒരുപോലെ ശ്രദ്ധയാകർഷിക്കുന്നു. ഒറ്റ ചിറകുകൊണ്ട് പറക്കാൻ പറ്റാത്തതു പോലെ ഒന്നിനെമാത്രം പരിപോഷിപ്പിച്ച് മറ്റൊന്നിനെഅവഗണിക്കുന്നതാണ് ഇന്ന് നാം നേരിടുന്ന അപചയങ്ങൾക്ക് അടിസ്ഥാനകാരണം.

ഭൗതികതലത്തിൽ കുറ്റം ചെയ്യുന്നതിൽ നിന്നു മാത്രം നമ്മെ പിന്തിരിയാൻ പ്രേരിപ്പിക്കുന്നതാണ് നീതിന്യായ വ്യവസ്ഥകളും ശിക്ഷകളും. അതുപോലെ ആത്മീയതലത്തിൽ നമ്മുടെ കർമ്മങ്ങൾക്കനുസരിച്ച് ശിക്ഷിക്കാനും രക്ഷിക്കാനും അദൃശ്യമായ ഒരു പരാശക്തി (എന്തു പേരും വിളിക്കാം). നമുക്ക് മുകളിൽ സദാ നമ്മെ സസൂക്ഷ്മം വീക്ഷിച്ച് കൊണ്ടിരിക്കുന്നു എന്ന തിരിച്ചറിവ് തെറ്റു ചെയ്യുന്നതിൽ നിന്ന് പിന്തിരിപ്പിക്കുക തന്നെ ചെയ്യും. ഇതെല്ലാം വിഡ്ഢിത്തവും അന്ധവിശ്വാസവുമെന്ന് ഉദ്ഘോഷിക്കുന്നവർ ഇന്ന് ലോകത്ത് കാണുന്ന അക്രമം, ഭീകരത, ചതി, അസഹിഷ്ണുത മുതലായവയുടെ മൂലകാരണമെന്തെന്ന് ചിന്തിക്കണം. മുകളിൽ പറഞ്ഞ വിശ്വാസകുറവല്ല കാരണമെന്ന് പറയാനെളുപ്പമാണ്. എന്നാൽ എന്തുകൊണ്ടാണ് എന്ന് ഇവർക്ക് തീർത്ത് പറയാൻ കഴിഞ്ഞിട്ടുണ്ടോ? സൂര്യനിൽ നിന്ന് അൾട്രാവയലറ്റ് രശ്മികൾ ഭൂമിയിൽ പതിച്ച് നാശം വിതക്കുന്നത് തടയുന്നത് ഓസോൺ പാളിയാണല്ലോ. അതിന് കേടു സംഭവിച്ചാൽ ദുരന്തമാണ് ഫലമെന്ന് സമ്മതിക്കുന്നു. അതുപോലെ കുറ്റം ചെയ്യാൻ മനസ്സിനെപ്രേരിപ്പിക്കുന്ന പ്രവണതയെ തടയുന്നതാണ് ആത്മീയതയിൽ ഉള്ള വിശ്വാസമെന്ന് സമ്മതിച്ചേ പറ്റൂ.

ഭാഗ്യത്തിന് പൊതുവിൽ സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണ സമാജത്തിൽ ദൈവവിശ്വാസം, ഗുരുഭക്തി മുതലായവ ഏറെക്കുറേ ഇന്നും നിലനിൽക്കുന്നുണ്ട് എന്നത് ആശ്വാസം തന്നെ. പക്ഷെ യുക്തിചിന്ത, നിരീശ്വരവാദം, പുരോഗമനത്തെക്കുറിച്ചുള്ള കാഴ്ചപ്പാട് മുതലായവയുടെ സ്വാധീനത്താൽ നമ്മുടെ യുവതലമുറ വഴി തെറ്റിപ്പോകുമോയെന്ന ആശങ്ക നിലനിൽക്കുന്നു. ഇത് അകറ്റാനുള്ള ശ്രമം വ്യക്തികളിൽ നിന്നും കുടുംബത്തിൽ നിന്നും സമുദായത്തിൽ നിന്നും തന്നെ തുടങ്ങണം. ഇതിന് മനസ്സിനെഈശ്വരോന്മുഖമാക്കാൻ സഹായിക്കുന്ന സന്ധ്യാവന്ദനം, കുടുംബത്തോടെയുള്ള ക്ഷേത്രദർശനം, ധർമ്മഗുരുസേവ മുതലായവ പ്രോത്സാഹിപ്പിക്കണം. നമുക്ക് വിധിച്ചിട്ടുള്ള നിത്യ

കർമ്മങ്ങൾ മുറ പോലെ നിറവേറ്റണം. മുതിർന്നവരെ അനുകരിച്ച് ചെറുപ്പക്കാരും പ്രവർത്തിക്കുന്ന സാഹചര്യമുണ്ടാക്കണം.

സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർക്ക് മുഴുവൻ വൈദികവൃത്തി ചെയ്യാൻ കഴിയാത്ത സാഹചര്യത്തിൽ ഇത്തരം കാര്യങ്ങൾ നമുക്ക് വേണ്ടി അവ ചെയ്യാൻ നമ്മിലെ ഒരു വിഭാഗത്തെ അർച്ചകരായും പുരോഹിതരായും മറ്റും ചുമതലപ്പെടുത്തിയിട്ടുണ്ടല്ലോ. അവർ നമുക്ക് വേണ്ടി ചെയ്യുന്ന അനുഷ്ഠാനങ്ങളുടെ ഫലം നമുക്കുള്ളതാണ്. ശരിയായാലും തെറ്റായാലും. അതിനാലാണ് നാം ദക്ഷിണ കൊടുക്കേണ്ടത്. അതു കൂലിയല്ല. അതിനാൽ വിലപേശലും പാടില്ല. അടുത്ത കാലത്തായി പല വൈദികരും പ്രാർത്ഥനയിലും മന്ത്രോച്ചാരണത്തിലും വേണ്ടത്ര അവധാനത കാണിക്കാറില്ലെന്നത് ഒരു ദുഃഖസത്യമാണ്.

മന്ത്രോഃ ഹീനഃ സ്വരതോ വർണ്ണതോ വാ
മിത്ഥ്യാ പ്രയുക്തോ നതമർത്ഥമാഹ
സ വാഗ്വജ്രം യജമാനം ഹിനസ്തി
യഥേന്ദ്ര ശത്രുഃസ്വരതോപരാധാത്

വേദംഗമായ പാണിനീയ ശിക്ഷാ എന്നതിൽ ഇങ്ങനെപറഞ്ഞു കാണുന്നത് ശ്രദ്ധേയമാണ്.

മന്ത്രം ഉച്ചരിക്കുന്നതിൽ സ്വരമോ വർണ്ണമോ കുറഞ്ഞാലോ തെറ്റായി പ്രയോഗിച്ചാലോ ഉദ്ദേശിച്ച ഫലം കിട്ടില്ല. ആ തെറ്റ് വാഗ്വജ്രമായി യജമാനനെനശിപ്പിക്കുകയാണ്. അപ്പോൾ പുരോഹിതന്റെ പ്രമാദം നമ്മെയാണ് ബാധിക്കുക.

ദീർഘകാലം ഉഗ്രമായ തപസ്സനുഷ്ഠിച്ച് പ്രത്യക്ഷപ്പെടുത്തിയ ഉപാസനാമൂർത്തിയോട് 'നിർദേവത്വം' വരിക്കാൻ ഉദ്ദേശിച്ച കുംഭകർണ്ണൻ ആവശ്യപ്പെട്ട വരം നിദ്രേവത്വം എന്നായതിന്റെ വിനനമുക്കറിയാമല്ലോ. അതുപോലെ പ്രാർത്ഥനയിൽ 'കല്ല്യാണാദ്ഭൂത ഗാത്രായ കാമിതാർത്ഥ പ്രദായിനേ' എന്നതിൽ 'പ്രദായിനീ' എന്ന് പ്രയോഗിച്ചു കാണുന്നു. ഒന്നോ രണ്ടോ പേരല്ല വിവിധ പ്രദേശങ്ങളിൽ നിന്നു വരുന്ന പല വൈദികരും ഇങ്ങനെചൊല്ലിക്കാണുന്നു. ''മോന്തായം വളഞ്ഞാൽ അറുപത്തിനാലും വളയും'' എന്നതിനാലാണോ എന്നറിയില്ല. ഇങ്ങനെശ്രദ്ധയില്ലാതെ ലാഘവത്തോടെ പ്രവർത്തിക്കുന്നത് അവരെ പുരോഹിതർ എന്നതിന് പകരം പുരോഹതർ ആക്കുകയല്ലേ. എടുത്തു പറയേണ്ട മറ്റൊരു കാര്യം വിവാഹം, ഉപനയനം, ശേഷക്രിയാദികൾ മുതലായവയ്ക്ക് പുരോഹിതർ വസൂലാക്കുന്ന തുകയെ സംബന്ധിച്ചാണ്. ഇപ്പോൾ മിക്കതിനും ഒരു പാക്കേജ് ആണ്. അവർ മുന്നോട്ട് വെക്കുന്ന പാക്കേജ് മറ്റുള്ളവർ സ്വീകരിച്ച് കാര്യം നടത്തിക്കും. ഇടത്തരക്കാരും പാവപ്പെട്ടവരുമാണ് ധർമ്മസങ്കടത്തിലാകുന്നത്. നിശ്ചയിച്ച നേർച്ചകളായ അനുഷ്ഠാനങ്ങളും മറ്റും നടത്താതിരിക്കാനും മനസ്സു വരില്ല. അവർ അതിന് വേണ്ടി വളരെ ബുദ്ധിമുട്ടുകയും ചെയ്യും. ഒരാളുടെ അച്ഛന്റെ മരണശേഷം ശേഷക്രിയകൾക്കായി പുരോഹിതർ ആവശ്യപ്പെട്ട വൻ തുക സ്വരൂപിക്കുന്നതിനുള്ള ക്ഷീണം തീരും മുമ്പേ അമ്മയും മരിച്ചുവത്രെ. അമ്മയുടെ ശേഷക്രിയയ്ക്ക് എന്തു ചെയ്യണമെന്നറിയാതെ കടം വീട്ടാൻ കരുതിയ ഒരു ചെറിയ തുകയുമായി പുരോഹിതനെസമീപിച്ച്

“ഭട്ടമാം, അമ്മയും പോയതറിയുമല്ലോ. ഇപ്പോൾ എന്റെ കയ്യിൽ ഇത്രയേ ഉള്ളൂ. അതുകൊണ്ട് അമ്മയെ എവിടെ വരെ എത്തിക്കാൻ കഴിയുമോ തൽക്കാലം അത്രവരെ എത്തിച്ചാലും. പിന്നീട് ഞാൻ പോകുമ്പോൾ അമ്മയുടെ കൈയും പിടിച്ച് കൊണ്ടു പോയ്ക്കോളാം” എന്ന് പറഞ്ഞുവത്രേ. ഇതൊരു കെട്ടുകഥയാണെന്ന് തോന്നാമെങ്കിലും യഥാർത്ഥമാണ്.

മറ്റൊരു കാര്യം പൊതുവിൽ ധരിച്ച് വച്ചിരിക്കുന്നത് അർച്ചകന്റെ മകനാണെന്ന കാരണത്താൽ മാത്രം അർച്ചകരാകുമെന്നാണ്. വൈദിക കർമ്മ പരിജ്ഞാനമില്ലെങ്കിൽ പോലും ഭട്ടരുടെ മകൻ ഭട്ടനാകുമെന്നാണ്. ഷേണായിയുടെ മകൻ ഷേണായിയാകുന്നതു പോലെയല്ല ഇത്. ബ്രാഹ്മണ്യം ജന്മം കൊണ്ട് മാത്രം കിട്ടുന്നതല്ല. കർമ്മം കൊണ്ടാണ്. സാധാരണ ഇപ്പോൾ കാണുന്നത് വൈദിക ചടങ്ങുകളും മറ്റും നടത്താൻ ആ രംഗത്ത് ഒരു പരിചയവുമില്ലാത്തവരെ കൊണ്ട് ചെയ്യിക്കുന്നതാണ്. ദക്ഷിണ അവർക്കും കൊടുക്കണം. ഇത് ഫലത്തിൽ യജമാനനും യോഗ്യതയില്ലാതെ സ്വീകരിക്കുന്ന ആൾക്കും ദോഷമുണ്ടാക്കുന്നതാണ്. നിസ്സാരമെന്ന് തോന്നാവുന്ന ഈ കാര്യം യഥാർത്ഥത്തിൽ ഗൗരവമേറിയതാണ്. ഡോക്ടറുടെ കച്ചവടക്കാരനോ അധ്യാപകനോ ആയ മകൻ ചികിത്സിക്കാൻ തുടങ്ങിയാൽ എന്തായിരിക്കും ഫലം. പണം തന്നെ ദൈവമെന്ന് കരുതി ഉപാസനനടത്തുന്ന ചില വൈദികരുടെ ഇത്തരം പ്രവർത്തികൾ വൈദിക സമൂഹത്തെ തന്നെ തെറ്റിദ്ധരിക്കാൻ ഇടയാക്കുന്നുവെന്നത് ഒരു അഹിതകരമായ സത്യമാണ്. സനാതനധർമ്മാധിഷ്ഠിതമായ രീതിയിൽ പൗരോഹിത്യവും മറ്റു അനുഷ്ഠാനങ്ങളും നടത്തി പൂവ് സമർപ്പിക്കേണ്ടിടത്ത് ഒരു ഇതളെങ്കിലും ഭക്തിയോടെ അർപ്പിക്കുന്നതാണ് ഭഗവാന് പ്രിയങ്കരമെന്ന് കരുതുന്ന വൈദികശ്രേഷ്ഠർ സമുദായത്തിൽ ഉണ്ട് എന്നത് ഭാഗ്യം തന്നെ. ഇവർ ഗൃഹസ്ഥരാൽ അങ്ങേയറ്റം ആദരിക്കപ്പെടുന്നുമുണ്ട്. ത്യാഗോജ്ജ്വലമായ ഇവരുടെ സേവനത്താലാണ് സമാജത്തിൽ കുറച്ചെങ്കിലും സദാചാരവും ദൈവവിശ്വാസവും ഗുരുഭക്തിയും നിലനിൽക്കുന്നതെന്ന് ആശ്വസിക്കാം.

ഈ പ്രശ്നങ്ങൾ പരിഹരിക്കുന്നതിന് സമുദായ ക്ഷേത്രങ്ങളുടെയും സംഘടനകളുടെയും നേതൃത്വത്തിൽ ബന്ധപ്പെട്ടവരെയെല്ലാം പങ്കെടുപ്പിച്ച് ഒരു ആചാര്യ സംഗമം നടത്തി രമ്യമായ തീരുമാനത്തിലെത്തുന്നതുമാണ്.

സമാജാംഗങ്ങളുടെ ഭാഗത്തു നിന്നും ഉണ്ടാവുന്ന പലവിധം ദോഷങ്ങൾ സംഭവിക്കാതിരിക്കാൻ പ്രത്യേകം ശ്രദ്ധ വേണം. ക്ഷേത്രങ്ങളെയും മറ്റു ആദ്ധ്യാത്മിക കേന്ദ്രങ്ങളെയും അർഹിക്കുന്ന ഗൗരവത്തോടെയാണ് പരിഗണിക്കേണ്ടത്. അവയെ വിനോദ സഞ്ചാരകേന്ദ്രങ്ങളായോ റിക്രിയേഷൻ ക്ലബ്ബുകൾ പോലെയോ കരുതി പെരുമാറുന്നത് ദൈവകോപത്തിനിട വരുത്തും. അതുകൊണ്ട് അതാത് ക്ഷേത്രങ്ങളിലെ നിയമങ്ങളും ചിട്ടകളും അച്ചടക്കത്തോടെ പാലിക്കുന്നതിൽ ഭക്തജനങ്ങൾ വീഴ്ച വരുത്തരുത്. ക്ഷേത്രത്തിലെ ദേവചൈതന്യം നിലനിർത്തുന്നതിന് അർച്ചകരും ഭക്തരും ഭാരവാഹികളും ഒരുപോലെ ബാദ്ധ്യസ്ഥരാണ്. ധർമ്മഗുരു സങ്കൽപ്പത്തിന്റെ മഹത്വം മനസ്സിലാക്കാതെ അടുത്തിടെ ഗൗഡസാരസ്വത ബ്രാഹ്മണരുടെ ധർമ്മഗുരു പീഠങ്ങളിലൊന്നായ ശ്രീ കാശിമഠ

സംസ്ഥാനുമായി ബന്ധപ്പെട്ട് സമാജത്തിനാകെ അപമാനമുണ്ടാക്കിയ നിർഭാ ഗ്യകരമായ പ്രശ്നം തികച്ചും കെട്ടടങ്ങിയിട്ടില്ലല്ലോ. ഗുരുവിന്റെ ആത്മീയതല ത്തിലുള്ള പരമാധികാരവും അപ്രമാദിത്വവും നിസ്സംശയം അംഗീകരിച്ച കോട തി വിധികളെയെങ്കിലും വിഘടിച്ച് നിൽക്കുന്ന ചെറിയ ഒരു ന്യൂനപക്ഷം അം ഗീകരിക്കേണ്ടതല്ലേ. സ്വാർത്ഥമതികളായ ചില ഉന്നതരുടെ താൽപര്യം സംര ക്ഷിക്കുന്നതിനും വ്യക്തികൾ തമ്മിലുള്ള വിദ്വേഷം തീർക്കുന്നതിനുമുള്ള ശ്രമ മാണ് ഇതിന് പിന്നിലെന്ന് വ്യക്തമാണ്. അതിനാണ് നിയമപ്രകാരം സ്ഥാനഭ്ര ഷ്ഠനായ ഗുരുവെന്ന് വിളിക്കപ്പെടാനുള്ള സകല യോഗ്യതകളും സ്വയം കളഞ്ഞു കുളിച്ച വ്യക്തിയെ പാവയാക്കി പ്രശ്നം തുടർന്നും നിലനിർ ത്തുന്നത്. സമാജത്തിൽ ഐക്യവും പരസ്പര വിശ്വാസവും നിലനിൽക്കുന്നത് കാണാനാഗ്രഹിക്കുന്ന ബഹുഭൂരിപക്ഷം സമുദായാംഗങ്ങൾ നിശ്ചയദാർഢ്യ ത്തോടെ ഇക്കൂട്ടരുടെ വിക്രിയകൾ ചെറുത്തു തോൽപ്പിച്ചാൽ മാത്രമേ പ്രശ്നം ഉടലെടുക്കുമ്പോൾ അതിനെലാഘവത്തോടെ വീക്ഷിച്ച് ഒറ്റക്കെട്ടായി തടയാതി രുന്നതിന്റെ പ്രായശ്ചിത്തമായി ഇനിയെങ്കിലും ഉറച്ച നിലപാടെടുത്ത് ധർമ്മഗു രുപീഠത്തിന്റേയും മഠാധിപതിയുടെയും മഹത്വം അംഗീകരിച്ച് സമാജത്തിന് പ റ്റിയ കളങ്കം മായ്ക്കാൻ ശ്രമിക്കേണ്ടതുണ്ട്. വെറും അധരവ്യായാമം നടത്തി കൂറു പുലർത്തുന്നു എന്ന് സമാധാനിക്കുന്നതിന് പകരം പ്രവർത്തി യിൽ കൂടി വിധേയത്വം കാണിച്ചേ പറ്റൂ.

സാഹിത്യം, സാമ്പത്തികം, രാഷ്ട്രീയം, വിദ്യാഭ്യാസം മുതലായ എല്ലാ രംഗങ്ങളിലും സാരസ്വത ബ്രാഹ്മണർ അവരവരുടെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നുണ്ടെന്നത് അഭിമാനിക്കത്തതാണ്. എന്നാൽ വ്യക്ത്യധിഷ്ഠിതമായ ഇവരുടെ പ്രവർത്തനം സമാജത്തിന്റെ പേരിലല്ല എന്നത് ഖേദകരമാണ്. സമുദായത്തിന്റെ ക്ഷേമത്തി നായി പ്രാദേശിക തലത്തിൽ പ്രവർത്തിക്കുന്ന സംഘടനകൾക്കു ഒരു പഞ്ഞവു മില്ല. എല്ലാവരുടെയും ലക്ഷ്യം സമാജം സേവയാണെങ്കിൽ ഇവർക്കെല്ലാം സ ഹകരിച്ച് ശക്തമായ ഒരു കേന്ദ്രസംഘടനസമാജത്തിന് ഇതുവരെ ഉണ്ടായില്ലെ ന്നതും വലിയ പ്രശ്നമാണ്. അതിനെതരണം ചെയ്യാൻ പ്രാദേശിക സംഘടന കളുടെ പ്രവർത്തനത്തെ ഏകോപിപ്പിച്ച് കൊണ്ട് സമാജം നേരിടുന്ന പ്രശ്നങ്ങളുടെ പരിഹാരത്തിനായി ഒരു സംഘടനരൂപപ്പെടുത്തുന്ന തിൽ പ്രാദേശികമോ വ്യക്തിപരമോ ആയ താൽപര്യങ്ങൾ തടസ്സം നിൽക്കരു ത്.

ഈ ലേഖനത്തിൽ പ്രകടിപ്പിച്ച അഭിപ്രായങ്ങളും വസ്തുതകളും ആ രെയും വിമർശിക്കാനോ, കുറ്റപ്പെടുത്താനോ, ആക്ഷേപിക്കാനോ അല്ല. ഇന്നു നിലനിൽക്കുന്ന യാഥാർത്ഥ്യം ചൂണ്ടിക്കാണിച്ച് വേണ്ട പരിഹാരം നടത്തി സമാ ജത്തിൽ ക്ഷേമവും ഐക്യവും നിലനിർത്തി കാണണമെന്ന ആഗ്രഹം മൂലമാ ണെന്ന വസ്തുത സഹൃദയർ വിലയിരുത്തി തെറ്റുകൾ വല്ലതും കടന്നു കൂടിയി ട്ടുണ്ടെങ്കിൽ പൊറുക്കണമെന്നും അപേക്ഷിച്ച് ഉപസംഹരിക്കുന്നു.

*****

KNOWLEDGE OF VEDAS VS MODERN SCIENCE

Compiled by Babu Raghutham

PART 1

I was a voracious reader during my student days. Right from my childhood my parents inculcated the habit of reading in me. I used to get only books as my birthday gifts (not toys) from my father ever since the days when I could read by myself. Later I read everything that I could lay my hands on. The fact that I was the only child, with no siblings to play with, diverted my attention singularly to books. Throughout my career as a Banker my reading was limited only to my need based requirements. During the frequent transfers the biggest cartons that used to be moved were my collection of books. After retirement I turned to reading with vengeance, making up for the lost years. When I started writing articles for Saraswath Vani I was exposed to a lot of stuff about our Puranas during my search for answers. My only regret in life now is that I did not learn Sanskrit , which could have given me better insight into the whole reservoir of knowledge handed down by our ancestors.

Our Vedas are such reservoirs of ancient wisdom that a lifetime may not be enough to study it. These are the ancient religious texts which define truth. It is believed that the texts were received by scholars directly from God and passed on to the generations by word of mouth.

The credit for almost all the great inventions and discoveries so far has always been given to the Western world. Their achievements are well-documented and widely shared , whereas ours remained an exclusive preserve of a few and were shared selectively. Here we need to draw a distinction between discovery and invention. To discover is to figure out something which pre-exists. The solar system, phenomenon of eclipses, photosynthesis, cloud formations, energy and its sources along with their under-lying principles were discovered by the scholars of ancient India and these were duly recorded in Vedic and Post Vedic literature which flourished between 7000 B.C. to 1000 A.D. Rig Veda explains movement of Moon around Earth and Earth around Sun. Many discoveries of Physics, Chemistry, Botany, Astronomy,

Meteorology and Ecology which are attributed to the scientists belonging to the Sixteenth Century A.D onwards, have actually been fully and comprehensively explained in the Vedas.

In contrast, to invent is to create something new, based on a chain of discoveries already done. Vedas do not deal with such inventions for example car, airplane, generation of electricity and computers etc. However, lakhs of ancient Sanskrit manuscripts, which include Vimanashastra, Vrikshayurveda, Rasayanshastra etc are documented and kept with the libraries in India. The details of these could form a subject matter modern scientific research in future.

Let us examine the following:

1.Sushruta Samhita is the oldest Medical and Surgical Encyclopedia known to mankind and was written during the 6th century BC. The Sushruta Samhita contains 184 chapters with descriptions of 1,120 illnesses, 700 medicinal plants, 64 preparations from mineral sources and 57 preparations based on animal sources. Sushruta is considered to be the first human to perform medical surgeries. The book also has vast details on embryology, human anatomy, along with instructions for venesection, the positioning of the patient for each vein, and the protection of vital structures (marma). The oldest documented evidence (9000 years ago) for the drilling of human teeth of a living person was found in Mehrgarh along with the evidences of orthopedic surgeries. But advent of modern medicine as it is practiced today can be traced back to the Stone Age when primitive forms of herbal medicines were used. But the Vedas predate this by several thousands of years.

2. Vedas were the first ones to acknowledge the existence of the Solar System. Rig Veda 1.35.9 says ' Sun moves in its orbit which itself is moving. Earth and other bodies move around sun due to force of attraction, because sun is heavier than them'. But modern astronomers had to wait till 1543. when Nicolaus Copernicus developed the Heliocentrism, the astronomical model in which Sun is positioned near the center with Earth and the other planets orbiting around it in their paths. Much before Isaac Newton explained gravity, ancient Indian scholars had already figured out how it worked.

3.Mahabharata mentions the concept of Cloning, Test tube babies and Surrogate mothers. Gandhari had 100 sons. There is the scientific explanation behind her giving birth to a 100 kids. Each 'Kaurava' was created by splitting the single embryo into 100 parts and growing each part in a separate kund (container). Is this not identical to the IVF or cloning process of today. The birth of Karn, with the characteristics adopted from men of Kunti's choice runs parallel to the concept of genetically modified babies. The world's first baby to be conceived through IVF was born on July 25th 1978.The first gestational surrogate pregnancy was successfully achieved in 1986. I definitely believe that Vyasa's Mahabharata does not belong to the Sci-Fi genre, though it dealt with all these scientific phenomena. Recently, in November 2018, a chinese scientist has claimed to have used the gene editing technique CRISPR to create twin girls.

4.There is a verse in Hanuman Chalisa which precisely calculates the distance between earth and sun.

"Yug sahasra yojana par bhanu,
leelyo taahi madhura phal jaanu"

Hanuman travelled thousands of kilometers to swallow the sun thinking it to be fruit. The word-to-word translation of the same excerpt reveals the distance that Hanuman travelled.

1 Yuga = 12000 years. 1 Sahsra = 1000.
1 Sahasra Yug = 12000x 1000 = 12,000,000 years.
1 Yojana = 8 miles (as per 14th century astronomer Paramesvara)
1 mile = 1.6 kms
So 12,000,000 x 8 x 1.6 = 153,600,000 kms.

As per modern scientific calculation Earth's closest approach to sun called 'perihelion' is about 146,000,000 kms and the farthest approach called 'aphelion' is about 152,000,000 kms. This difference is because of the elliptical orbit of earth around the Sun. The average distance is said to be around 150,000,000 kms.

5. Our ancient scholars already knew about the Speed Of Light. Sayana, a vedic scholar from the 14th century once said, "With deep respect, I bow to the sun, who travels 2,202 yojanas in half a nimisha". Nimisha is the time taken for the blink of an eye. Shanti

Parva of Mahabhartata describes Nimisha as follows.
15 Nimishas = 1 Kastha
30 Kashtas = 1 Kala
30.3 Kala = 1 Muhurtha
30 Muhurthas = 1 Diva-Ratri (Day – Night)
We know Day - Night is 24 hours
So we get 24 hours = 30x30.3x 30x 15 = 4,09,050 nimishas.
We also know 1 hour = 60x60 = 3600 seconds
So 24 hours= 24x 3600 = 86400 seconds = 4,09,050 nimishas
So 1 nimisha = 86400/4,09,050 = 0.2112 seconds.
That is the time taken for the blink of an eye.
1 Yojana is 9.09 miles (as per Vishnu Purana).
So the speed of light is 2,202 Yojanas in half a nimisha.
2202 x 9.09 = 20016.18 miles per 0.1056 seconds (half a nimisha)
Which is 1,89,547 miles per second
As per modern science the speed of light is 186000 miles per second.
See how close our Vedas are.

The length of the yojana varies depending on the different standards adopted by different Indian astronomers. In the *Surya Siddhanta* of the 5th century, for example, a yojana was equivalent to 5 miles and the same was matched by Aryabhata in his sanskrit astronomical treatise Aryabhattiya . However 14th century scholar Paramesvara and later A. C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada defined the yojana to be about 1.5 times longer, about 8 miles. In *The Ancient Geography of India*, Alexander Cunningham says that a yojana is traditionally held to be around 8 to 9 miles and calculates by comparison with Chinese units of length that it could have been between 6.7 miles and 8.2 miles.

6.Vedas also explained the science behind Eclipses. While the world feared the eclipses and associated all types of paranormal occurrences with the phenomenon, Vedas already had a very proper and scientific explanation. The below excerpt is proof that they knew that the moon wasn't self illuminated. Rig Veda 1.84.15 "The moving moon always receives a ray of light from sun".

There is a verse on eclipse which translates to "O Sun! When you are blocked by the one whom you gifted your own light (moon), then earth gets scared by sudden darkness"

विद्यार्थि पंक्ति

दूद	പാൽ	Milk
साया/साई	പാട	Cream ofMilk
ताक	മോര്	Butter Milk
मेणायि	തൈര്	Curd
लोणि	വെണ്ണ	Butter
तूप	നെയ്യ്	Ghee
तक्का) कडि	കാച്ചിയ മോര്	Tonned Butter Milk

गोंय आनी केरळ कोंकणींतलें अंतर

धोल	-	गुहे
चार्फे	-	चंपें
परिमळोदक	-	गुर्बा उदाक
मोस्त्र नमूनो	-	उदाहरण
अमीत	-	म्हस्त, भोर्नु
अमूक	-	अमकें/अमको

आभार : "स्पन्दन"

केरळ कोंकणी अकादेमी

Notice

The General Body meeting of the **VANITHA VIBHAG, YUVAK VIBHAG** and **VIDHYARTHI VIBHAG** of the S.G.S Sabha for the term **2018 - 20** will be held on **11 am on 10-03-2019 (Sunday)** at **HARI VENKATESH HALL, Railway Station Link Road, Calicut** as per the following details.

1. Prayer
2. Welcome address-Secretary, S.G.S. Sabha
3. Reporting by Vanitha, Yuvak and Vidyarthi Vibhags
4. Presidential address
5. Election of Seven Managing committee members including President and Secretary for each of the three Vibhags for the term 2018-20
6. Installation of the newly elected office bearers
7. Felicitations
8. Any other matter with the permission of the Chair
9. Vote of thanks

NOTE: 1, Members and their first relatives who are studying for a recognized academic course are eligible to vote and contest in Vidyarthi Vibhag. 2.Members and their first relatives who are aged between 21 and 40 are eligible to vote and contest in Yuvak Vibhag.3.Members and their first relatives who are women and aged above 21 are eligible to vote and contest in Vanitha Vibhag.

Nominations can be submitted to the Secretary any time before the conduct of elections.

For Governing Council
Prabhakar Kamath, Secretary
Mob: 9447171224

കൊങ്കണി കവിതാസായാഹ്നം



കേന്ദ്ര സാഹിത്യഅക്കാദമിയുടെ സാഹിത്യവേദി (Literary Forum) പദ്ധതിയിൻ കീഴിൽ വ്യത്യസ്തമായ ഒരു കവിതാസായാഹ്നം കോഴിക്കോട് ശ്രീ സുകൃതീന്ദ്ര കലാമന്ദിറിൽ നടന്നു. കൊങ്കണി ഭാഷാ പ്രതിഷ്ഠാനത്തിന്റെ സഹകരണത്തോടെ 2019 ഫെബ്രുവരി 10 ഞായറാഴ്ച ഉച്ചതിരഞ്ഞ് 3 മണിയ്ക്ക് ആരംഭിച്ച പരിപാടിയിൽ ഡോ.ബാലഗോപാൽ ടി.എസ്.പ്രഭു അദ്ധ്യക്ഷത വഹിച്ചു.കുമാരി സ്വാതിറാവുവിന്റെ ഈശ്വരപ്രാർത്ഥനയ്ക്കു ശേഷം പ്രൊഫ.പുഷ്പാ മല്ലൻ, ഡോ.പി.കെ.രാധാമണി എന്നിവർ ചേർന്ന് പ്രശസ്ത കൊങ്കണി എഴുത്തുകാരിയായിരുന്ന യശഃശരീരയായ ഡോ.എൽ.സുനീത ബായിയുടെ ഛായാചിത്രത്തിൽ പുഷ്പമാല്യം ചാർത്തി. ചടങ്ങിൽ പ്രകാശനം ചെയ്യുന്ന പുസ്തകം തയ്യാറാക്കിയ ഡോ. സുനീത ബായ് കൊങ്കണി കവി, പരിഭാഷിക, ബഹുഭാഷ പണ്ഡിത എന്നീ നിലകളിൽ പ്രശസ്തയാണ്. തുടർന്ന് കേന്ദ്ര സാഹിത്യഅക്കാദമിയുടെ കൊങ്കണി ഉപദേശകസമിതി അംഗമായ ശ്രീ പയ്യന്നൂർ രമേഷ്പൈ സ്വാഗതം ആശംസിക്കുകയും കാര്യപരിപാടിയെകുറിച്ച് സംക്ഷിപ്തമായി സംസാരിക്കുകയും ചേയ്തു.കൊങ്കണിയിലെ അറിയപ്പെടുന്ന കവികളായ ശ്രീ ശരത്ചന്ദ്ര ഷേണായ്, ശ്രീ. ആർ.എസ്. ഭാസ്ക്കർ, ശ്രീമതി സ്മിത ഷേണായ്, ശ്രീ എൻ.ബാലകൃഷ്ണമല്ല്യ എന്നിവർ തങ്ങളുടെ മൂന്നു കവിതകൾ വീതം അവയുടെ അന്യഭാഷാ വിവർത്തനത്തോടൊപ്പം അവതരിപ്പിച്ചു. പിന്നീട് കേന്ദ്ര സാഹിത്യ അക്കാദമി പ്രസിദ്ധീകരിച്ച 'ഹേം പുരാതന കിന്നരം' എന്ന കൊങ്കണി കവിതാ സമാഹാരത്തിന്റെ പ്രകാശനം നടന്നു. പുസ്തകത്തിന്റെ ആദ്യപ്രതി ശ്രീ.കെ. സുരേന്ദ്രറാവു (എഡിറ്റർ, സാരസ്വതിവാണി) വിനു നൽകിക്കൊണ്ട് ഡോ.പി.കെ രാധാമണി പ്രകാശനം നിർവ്വഹിച്ചു. ജ്ഞാനപീഠ പുരസ്കാര ജേതാവും യശഃ ശരീരനുമായ പ്രശസ്ത മലയാള കവി ശ്രീ ഒ.എൻ.വി.കുറുപ്പിന്റെ തിരഞ്ഞെടുത്ത കവിതകളുടെ കൊങ്കണി വിവരത്തിനസമാഹാരമാണ് ഈ പുസ്തകം. ഡോ.എൽ.സുനീതാ ബായിയാണ് കവിതകൾ പരിഭാഷപ്പെടുത്തിയത്. കേന്ദ്രസാഹിത്യഅക്കാദമിയുടെ കൊങ്കണി ഉപദേശകസമിതി അംഗമായ ശ്രീ.ചന്ദ്രബാബു യു.ഷെട്ടി കൃതജ്ഞത പ്രകാശിപ്പിച്ചു. എസ്.ജി..എസ്. സഭാ മുൻ പ്രസിഡന്റ് ശ്രീ.എസ്.ഡി.ഷേണായി വിശിഷ്ടാതിഥികൾക്കുള്ള ഉപഹാരങ്ങൾ വിതരണം ചെയ്തു. ശ്രീമതി രൂപാ എസ്.പൈയും കുമാരി സ്വാതിറാവുവും കാര്യപരിപാടിയുടെ അവതാരകരായിരുന്നു.

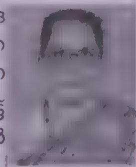
SHRAAVANA POORNIMA UPAHAARA FUND

Shri. G. Suresh Babu, Smt. Kasthuri Somanath Naik, Shri. G.Jaiker Pai, Smt. Latha Sudhakar Baliga and Shri.C.A.G. Santhosh Pai has instituted an endowment in memory of their beloved parents, M.Gopalkrishna Pai and Latha Bai (Rohini) for Rupees Twenty Five Thousand (Rs. 25,000) towards Shraavana Poornima Upahaara Fund of the Sabha.

SARASWATH VANI PUBLICATION

Shri. G. Suresh Babu, Smt. Kasthuri Somanath Naik, Shri. G.Jaiker Pai, Smt. Latha Sudhakar Baliga and Shri.C.A.G. Santhosh Pai has instituted an endowment in memory of their beloved parents, M.Gopalkrishna Pai and Latha Bai (Rohini) for Rupees Twenty Five Thousand (Rs. 25,000) towards Publication of the Saraswath Vani.

പണ്ടരിനാഥ ഭുവനേന്ദ്ര പുരസ്ക്കാർ 2018



കേരള കൊങ്കണി അക്കാദമിയുടെ "പണ്ടരിനാഥ ഭുവനേന്ദ്ര പുരസ്ക്കാർ" 2018 -ന് കൊച്ചിയിലെ ശ്രീമതി ഉഷ ആർ ഭട്ട് അർഹയായി. അവരുടെ "കുടജാദ്രി വൈയിർചി സൗന്ദര്യലഹരി" എന്ന യാത്രാ വിവരണത്തിനാണ് അവാർഡ്. അവർ ശ്രീ. KNR ഭട്ട് എക്സ് ചെയർമാൻ എം.എസ്സി ബാങ്കിന്റെ ഭാര്യയാണ്. അവർ തെലുങ്കു ഭാഷയിലും എഴുതാറുണ്ട്.

പണ്ടരി നാഥ ഭുവനേന്ദ്ര പുരസ്ക്കാർ - 2018 ശ്രീമതി ഉഷ ആർ ഭട്ടിന് ബഹുമാനപ്പെട്ട ജസ്റ്റിസ് എൻ.നരേഷ്, കേരള ഹൈക്കോടതി 2019 ജനുവരി 27 -ാം തിയ്യതി സമ്മാനിച്ചു. സ്പന്ദൻ മാസികയുടെ 100 -ാമത് ലക്കാഘോഷത്തിൽ വെച്ചാണ് സമ്മാനദാനം നിർവ്വഹിച്ചത്.

SRIMAD MAHABHARATHA DISCOURSE

Samajbandhavas,

It is my pleasure to invite all for the spiritual talk on " **SRIMAD MAHABHARATHA"** (Aadiparva and Sabhaparva) by Smt.Bhavana Bhaskar Prabhu, Mumbai at " Sankaralayam", opp. P.M.Stores, Tiruvangad, Thalassery from 8th March to 29th March 2019 between 5.30 pm and 8 pm. Medium of talk will be in Konkani.

I hereby request all of you to utlise this divine opportunity and participate in large numbers.

Smt. Sumathi Rajendranatha Pai
9447 044566

खास दीस

MARCH 2019

6 Wednesday : Amaavasi, Maagha Maasa Avasaanam
7 Thursday : Falguna Maasa Aarambham
11 Monday : Panchami Naagabhisheka pooja
14 Thursday : Meena Sankramanam
17 Sunday : Ekadashi
20 Wednesday : Kaama Dhahanam
21 Thursday : HOLI, Pournami
24 Sunday : Sankashta Chathurthi, Chandrodayam at 10 - 01 PM
31 Sunday : Ekadashi

2019 APRIL

5 Friday : Amaavasi, Falguna Maasa - Sishira Rithu- Vilambi Naama Samvatsara Avasanam
6 Saturday : VIKAARI Naama Samvatsara Aarambham
SAMSAAR PADAVO

SGS SABHA WISHES
ALL OUR MEMBERS A HAPPY YUGADI

आभारः श्री पाण्डुरंगा ट्रस्ट्

Printed & Published by K. Surendra Rao, Sooraj Jewellers, Kamath Lane, Calicut-673 001
for Samyuktha Gowd Saraswath Sabha, Calicut, Ph: 2701420,
Editor: K. Surendra Rao (Editor responsible for selection of news under the PRB Act.)
Printed at Kamala Offset, Calicut.

RNI No. 29569/79
SARASWATHVANI
Registered No: KL / CT / 104/ 2018-202
Date of Publication: 01-03-2019